बृहद असली प्राचीन
घर का वैद्य

[अर्थात् सस्ता प्रामाणिक आयुर्वेद घरेलू इलाज]

लेखक:

श्री घनश्यामजी त्रिवेदी

[आयुर्वेद शास्त्री]

९

१०

१०

प्रकाशक: १०

मीतल एण्ड कम्पनी ११

सतघड़ा, मथुरा। ११

मूल्य:- ११

मुद्रक-
फाइन आर्ट प्रिंटर्स, गुजराना गली, मथुरा

विषय-सूची

विवरण	पृष्ठांक
जन्मघुटी	१
बच्चों का ज्वर	१
दाँत निकलना	२
बच्चों का मुँह आने पर	३
कर्ण रोग	४
आँखें दुखना	५
दस्त आने पर	६
दांत निकलते समय	७
उल्टी, दस्त	८
श्वास-कास	८
बीसा यन्त्र	९
खांसी	९
छाती में कफ जमना	९
छाती में दर्द	१०
काली खांसी	१०
पुरानी खांसी	१०
खांसी	११
श्वास खांसी	११
अतिसार (पेचिस)	११

अतिसार गजकेसरी	१३
द्विजयावलेह	,,
बदहज्मी	,,
बालकों के सब रोगों की दवा	१४
चूर्ण अनारदाना	,,
चूर्ण हाजमा	,,
चूर्ण मजेदार	,,
खटमल मारना	१५
मच्छरमार	,,
सिर में जूं	,,
मक्खियां खत्म	,,
कान दर्द की दवा	,,
बालकों के हरे-पीले दस्त	१६-१७
ज्वर, नेत्र दुखना, हिचकी आना	१७
छींके आना	१८
दस्त बन्द की दवा	,,
पाचन-क्रिया ठीक करना	,,
भूख न लगना	,,
पेट दर्द होना	,,
सोते समय मुंह से लार टपकना	,,
मुंह से दुर्गन्ध आना, मरोड़ की दवा	,,

पेज नं० २० में

जिगर बढ़ना, पेट के कीड़ा, मुँह के छाले, भूख न लगना, खाने के बाद छाती में जलन होना।

पेज नं० २१ में

पेट की गैस, भूख न लगे, दस्त पतला; पेट में कभी-कभी दर्द हो, संग्रहणी की दवा, बाल ज्वर अमृत, मरोड़ी की दवा, फोड़े-फुन्सी की दवा, बिवाई का फटना।

पेज नं० १० में

स्त्री रोग चिकित्सा, गर्भाधान का वैज्ञानि रहस्य।

पेज नं० २६ में

ज्वर की दवा, सिर दर्द।

पेज नं० २७, २८ में

अपन्डिस साईप्सि की दवा, मासिक धर्म।

पेज नं० २० में

नींद न आना, ताकत की दवा, ब्लड प्रेशर, मासिक धर्म २० दिन में हो तो।

पेज नं० ३० में

शक्तिवर्धक दवा, बांझ स्त्री पुत्रवती हो, पहिले पहिले पुत्रवती, योनि संकोचन।

विवरण	पेज नं०
रक्त स्तम्भन योग, योनि-शूल, दूध बढ़े, हिस्टीरिया।	३१
कुछ कल्प तेल, स्तन-बर्द्धक।	३२
यदि मासिक धर्म जल्दी हो, प्रदरनाशक, मासिक धर्म के दिनों में शरीर में दर्द व बेहोशी आना, श्वेत की बीमारी।	३२
मासिक-धर्म अधिक मात्रा में आता है, सिर दर्द, चक्कर आना, पित्ती की दवा।	३४
दोनों पैर भारी और मोटे हों, लकवा मारने पर दौरे पड़ने की दवा, सरस्वती चूर्ण।	३५
केश बढ़ाना; बाल उगना, योनि के दोह अक्सीर अर्क।	३६
बाल काले होने की दवा, पेनवाम, सिर दर्द का मलहम	३७
सिर दर्द; पेनवाम का अचूक मलहम, तुलसी की चाय।	३८

विवरण	पृष्ठ
मूर्छा रोग की अनेक दवा	३९
सुलेमानी चूर्ण, नौसावर शुद्ध करना, क्षुधावर्द्धक	४०
पाचक गोली, गुणदायक चूर्ण, सुन्दरता रक्षक बाल	४१
स्नान विधि	४२
तपेदिक	४३
आवाज फटना, आवाज धीमी, खांसी का दौरा	४४
फुन्सियां, मुँह तथा शरीर पर बाल आना,	
चेहरे पर फुन्सियां, ब्लडप्रेशर, पित्ती, पसीना	
आना, दृष्टि कमजोर, सिर में फुन्सियां; पीलिया	
रोग, गर्भ निरोध की दवायें	४६
दांतों में कीड़ा लगना, दांतों के हर रोग	४९
पायरिया, बढ़िया मंजन नुस्खा	५०
हर प्रकार के ज्वर और उनकी चिकित्सा	५२
हैजा (कालरा) के लक्षण व दवा	५७
लू लगना व उपाय	६०
आम्ल पित्त	६२
कारण, लक्षण	६३
पथरिया	६४
सिर दर्द, आधा सीसी, सन्निपात	६५

नजला जुकाम की दवा	९७
दांतों के रोग	९८
कान की बीमारियां, आंखों की बीमारियां	९९
परबाल	१००
रतौंदी; मोतिया-बिन्द	१०१
दमा फेंफड़ें के रोग	१०२
खांसी, काली खांसी; निमोनिया	१०३
हैजा	१०५
तिल्ली	१०६
संग्रहणी, पेचिस	१०७
वायु रोग	१०८
बबासीर	१०९
दाद की दवा	१११
छाजन, बुखार की दवा	११२
हर प्रकार के चूर्ण बनाना व उनके फायदे	११३

असली प्राचीन घर का वैद्य

।। जन्म घुटी ।।

सौंफ की जड़, बायविड, अमलतास, मकोय, हरड़, बच, अजवायन, सफेद जीरा, फूल गुलाब; ढाक के बीज, मुनक्का, उन्नाब, पुराना गुड़, सुहागा, काला नमक; सब बराबर कूट-पीस मिलाकर रखलें।

।। बच्चों का ज्वर ।।

छोटे बच्चों को बुखार आने पर पहिले बच्चों के पेट की सफाई करनी चाहिए। बच्चों को प्रायः पेट खराब होने पर ही बुखार आता है।

इसके लिए बच्चों को अच्छी घुटी प्रातः औटा-कर गुनगुनी पिलानी चाहिए। पेट साफ करने की दूसरी दवा है भुनी हुई हींग, सुहागा एक रत्ती, काला नमक एक रत्ती। इन तीनों चीजों का पाउडर बना-कर रखलें, जो बच्चे चूर्ण की तरह चाट सकें उन्हें चटा दीजिये; जो नहीं चाट सकें उन्हें मां के दूध में

मिलाकर थोड़ा-२ चम्मच से पिला दीजिये, इससे पेट की खराबी ठीक हो जाती है।

इसके बाद नीचे लिखा काढ़ा बच्चों को सुबह-शाम पिलाने से ज्वर उतर जाता है—

नीम की छाल, परवल के पत्ते, नागर मोथा, मुलहटी, ये सब एक-२ रत्ती लेकर दो छटांक पानी पानी में उबालिये। आधा जल रह जाने पर बच्चों को पिला दीजिये।

॥ दांत निकालना ॥

बच्चों को दांत निकलते समय बड़ा कष्ट होता और प्रायः हरे-पीले दस्त लग जाते हैं जिसके कारण बच्चे बहुत कमजोर हो जाते हैं।

सर्दियों में बच्चों को यह औषधि दी जा सकती है, पंसारी या अत्तार से अच्छा जायफल लेकर दांत निकलते समय उसको घिसकर बच्चों को चटाने से विशेष लाभ होता है।

गर्मी के दिनों में दस्त हो तो सूखा बेल-फल का गूदा, आम की पुरानी गुठली, हींग और काला नमक सिल पर कूट-पीसकर एक-२ रत्ती के अन्दाज बच्चों

को चटाना चाहिये और जो चाट न सके उन्हें माँ के दूध में पिलाइये।

दांत निकलते समय भुना सुहागा शहद में मिला कर मसूड़ों पर दिन में दो-तीन बार मलते रहने से दांत सुगमता से निकल आते हैं; दांत निकलते समय मसूड़ों में एक प्रकार की अकुलाहट होती है; ऐसे में कई बार बच्चे गन्दी चीजों को मुँह में देकर मसूड़ों के नीचे दबाते हैं। इस समय बच्चों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। साफ छोटी चूसनी बच्चे के हाथ में दें। बच्चा स्वयं गोल गुण्डीदार चूसनी को मुँह में देकर दबाने लगेगा, मसूड़ों पर दबाव पड़ने से दांत आसानी से निकलते हैं।

।। बच्चों का मुँह आने पर ।।

प्रायः बच्चों के पेट में बदहज्मी और अपच होने के कारण मुँह में छाले पड़ जाते हैं, मुँह लाल हो जाता है और बच्चे लार डालने लगते हैं। ऐसी अवस्था में बच्चे दूध नहीं पीते।

सफेद कत्था ५ ग्राम, बन्सलोचन १ ग्राम; छोटी इलायची ६ ग्राम; शीतल चीनी ३ ग्राम, भुना तूतिया ३ ग्राम; गेरू ६ ग्राम और संगजरात ६ ग्राम बारीक

पीसकर रखलें । बालक के मुँहमें रोजाना तीन-चार बार बुरकते रहिये । दो-तीन बार औषधि लगाने से मुँह ठीक हो जाता है ।

। बच्चों के कर्ण रोग ।।

छोटे बालकों को कई प्रकार के कान के रोग हो जाते हैं, जिसके कारण बालक जोर-जोर से चिल्लाते हैं । ऐसी ही अवस्था में नीचे लिखी औषधियों का प्रयोग कीजिये—

यदि बालक के कान में दर्द हो तो चौथे के तेल को एक-एक बूंद दिन में दो बार कान में डालिये । कान के दर्द में सुदर्शन के पत्ते का रस दिन में दो या तीन बार निचोड़ने से भी कान का दर्द ठीक हो जाता है ।

कान में खुजली और दर्द होने पर शुद्ध सरसों के गुनगुने तेल की एक-दो बूंद कानमें डालने से कान की खारिश और दर्द शांत होगा तथा मैल इकट्ठा होकर बाहर आ जायेगा ।

सीने पर बलगम जम जाने पर सेंधा नमक को कड़वे तेल में एक पत्थर पर घिसे और गरम करके

सोने पर, पसलियों पर मलें तो इससे बलगम पिघल जाता है।

एक चाय के चम्मच भर माँ के दूध को जरा-से सेंधा नमक से फाड़कर बालक को पिलादें, इससे भी सर्दी और बलगम दूर हो जाता है।

छोटे बालकों के कान के पीछे की ओर अक्सर मैल से कट जाता है, इसमें काले कम्बल को जलाकर उसकी राख पीसकर छिड़क दें, ऊपर से नारियल का तेल टपका दें तो शीघ्र आराम होगा।

यदि कान में फुन्सी निकल आयी हों और बहुत टीसें हों तो कारबोलिक गिलसरीन की एक-दो बूंदें सुबह-शाम कान में डालने से फुन्सी ठीक हो जाती हैं, सूखी टीसों में समुन्द्रफेन का बारीक पाउडर डालने से पीड़ा शान्त हो जाती है।

॥ बच्चों की आँखें दुखना ॥

बालक की आँखों की सफाई न रहने पर मक्खियाँ उन पर मंडराती हैं और ऐसे बालकों की आँखें बार-बार दुखनी आ जाती हैं, इसलिए बालकों की आँखों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

गेरू ४ ग्राम, अफीम १ ग्राम, सौंठ ४ ग्राम, एक नग पोस्त का डोंडा लें। पहले डोंडे का चूर्ण कर २० ग्राम पानी में इतना उबालिये कि १५ ग्राम काढ़ा रह जाये। गेरू और सौंठ बहुत बारीक पीस लें। गेरू, सोंठ व अफीम को पोस्त के काढ़े में खरल में अच्छी तरह घोटे और गोलियां बनाकर सुखा लें। पोस्त के छिलके पानी में गोली को घिसकर दिन में तीन बार बालकों की दुखती आंखों में लगाते रहने से आंखें ठीक हो जाती हैं।

आंखों को साफ रखने के लिए कभी-२ बालकों की आँखों में गुलाब जल भी डालते रहना चाहिए। आजकल की दवाओं में १० प्रतिशत आरजी रोल दुखती आँखों के लिए बहुत उपयोगी दवा है।

॥ बच्चों को दस्त आने पर ॥

प्याज का रस चम्मच भर निकालकर सरसों के समान अफीम एक सींक में लगाकर उसे आंच में दिखाकर फुला बनालें, इसे प्याज के रस में घोलकर पिलायें तो दस्त ठीक हो जाते हैं।

२—चार-पांच छुहारे आटे की लोई में रखकर गोला बनालें और इस गोले को कंडे की आग में गाड़

दें। जब लोई पक जाये तो छुहारे निकालकर उसमें उड़द बराबर अफीम मिलाकर पीस दें, चने बराबर गोली बनालें और एक-एक गोली दिन में दो बार दें तो दस्त शर्तिया बन्द हो जायेंगे।

३—दो-तीन बार थोड़ा-थोड़ा सा कपूर देने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं। चाहें बड़ों को दें अथवा बालकों को।

४—गूलर का दूध बताशे में चाय के चम्मच का आधा दिन में दो या एक बार खिलायें तो आंव और सादे दस्त बन्द हो जाते हैं।

५—आंव के दस्त आने पर ईसबगोल शाम को थोड़े से पानी में भिगो दें और सुबह कपड़े में छान-कर मिश्री मिलाकर पिला दें; इससे आंव के दस्त बन्द हो जाते हैं।

६—थोड़ी-सी सौंफ और एक गांठ सौंठ कूटकर किसी बर्तन में पानी के साथ पकने के लिए रख दें, जब पानी पककर आधा रह जाये तो उसे चाय के चम्मच भर दिन में दो या तीन बार देने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

॥ दांत निकलते समय ॥

बेलगिरी की मिंगी, कत्था, आमले का वक्कल, बराबर-बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनाले, रोग-अनुसार मात्रा में दें।

चौकिया सुहागा शहद में मिलाकर दांतों पर मलने से दांत आसानी से निकलते हैं। बालक को दस्त हो तो इसे फुलाकर शहद में मिलाकर दें।

॥ उल्टी और दस्त ॥

अर्क सौंफ ५-५ बूंद प्रातः-सायं उष्ण दूध से सेवन करें। समभाग जल मिश्रित दूध देवें।

॥ स्वास कास के लिए ॥

सुखी खांसी में सुहागा फुलाकर २-२ रत्ती दिन में दो बार शहद से लें और ठण्डे एवं चिकने पदार्थों का सेवन न करें।

दमा की बीमारी में जब दर्द गहरा हो तो अपामार्ग का काढ़ा लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

श्वास के रोग में कूट, ककड़ा सिंगी, सोमलता, बहेका, मुलहठी, अर्जुन की छाल समान मात्रा में चूर्ण दो-दो माशे दिन में ३ बार शहद से दें।

* बच्चों के हब्बा-डब्बा रोग का इलाज *

जिसमें बच्चे की पसली चलती है और बुखार भी होता है।

१-अण्डी का तेल पेट पर मलने से बच्चे की पसली चलना बन्द हो जायेगा।

२-बकायन के पत्ते गर्म करके पेट पर बांधे तो जरूर आराम होगा।

३-मूंगा गरम करके दोनों भौवों के दरिम्यान दाग देने फौरन आराम होगा।

४-बच्चों के दांत सुहागा भुना हुआ शहद में मिलाकर मसूड़ों पर लगाने और चटाने से बच्चों के दांत आराम से निकल आते हैं।

* बच्चों की खांसी *

तुलसी के पत्तों, पानके पत्तों और अडूसे के पत्तों का रस निकालकर रस शहदके साथ चटाया करें।

* छाती में कफ जमा *

सुहागा फुलाकर चार-चार रत्ती दिनमें दो-तीन बार शहद से सेवन किया करें।

* छाती में दर्द और जकड़ाहट *

अभ्रक भस्म दो-दो रत्ती सुबह-शाम शहद से सेवन करनी चाहिए।

* खाँसी तथा कफ आना *

सौंठ का चूर्ण दो रत्ती की मात्रा में दिन में तीन बार शहद से चाट लिया करें।

* काली खाँसी पर *

काकड़ा, सिंगी, अतीत, कूठ और मुलहटी को समान मात्रा में बारीक कूटकर रखलें। थोड़ी मात्रा में शहद से दिन में तीन बार चटा दिया करें।

* पुरानी खाँसी पर *

सितोपलादि चूर्ण सुबह-शाम शहद से तथा वासावलेह का सेवन दिन में दो बार किया करें।

* सरल चिकित्सा *

स्वास कास

हर प्रकार की खाँसी में ३ तोला गेहूँ का आटा ३ तोला असली घी का हलवा और आटा भूनते समय उसमें तीन माशा पिसी हल्दी भी डालें और खूब भूने। रुचिपूर्वक खायें, दो रोगमें अवश्य आराम

होना चाहिए परन्तु यदि खांसी ज्वर के साथ हो तो यह हलवा नहीं खाना चाहिए। हलवे के साथ पानी न पीयें।

* खांसी पर दवायें *

काली मिर्च और पीपर १ तोला जवाखार आधा तोला अनार की छाल २ तोले इनका चूर्ण बना ८ तोले गुड़ मिलाकर ४-४ माशे की गोली बनालें। इन गोलियों को मुख में रखकर चूसने से सब तरह की खांसी दूर होती है।

* श्वांस खांसी पर *

सौंठ जंगी हरड़ और नागरमोथा-इनको बराबर लेकर कूट-पीसकर इसमें दूना गुड़ मिला गोली बना के इनके चूसने से श्वांस और खांसी दूर होती है।

केवल बहेड़े के छिलके को भी मुख में रखकर चूसने से श्वांस दूर हो जाती है।

* अतिसार (पेचिस) *

१- बबूल के पत्तों का रस पीने से सब तरह के दुस्तर और भयानक अतिसार में आराम हो जातेहैं।

२-भांग को तवे पर भूंजकर, उसका चूर्ण शहद के साथ; रात के समय खाने से अतिसार, संग्रहणी,

मन्दाग्नी और नींद न आने का रोग—ये सब नाश होते हैं। कई बार परीक्षा किया है।

३—चार मासे सोमरस पीसकर व उसमें मिश्री मिलाकर खाने से पुराने अतिसार में लाभदायक है।

४—अनारदाना १६तोले, मिश्री १६तोला, पीपर ४ तोले, पीपलामूल ४ तोले, अजमान ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, धनिया ४ तोले; सफेद जीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, बंसलोचन ८ मासे, दालचीनी ८ मासे इलायची ८ मासे; नागकेसर ८ मासे—इन सब दवाओं को कूट-पीस, कपड़छन कर बर्तन में रखें। इस चूर्ण के सेवन से सब तरह के अतिसार नाश हो जाते हैं।

५—सेमल की ताजा छाल लाकर उसे सिल पर पीस कपड़े में छानकर रस निचोड़ लो। इसके पीने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

नोट—सेमल की छाल या जड़ घिसकर पिलाने से भी अतिसार नाश होता है।

६—आमले की पत्ती, बबूल की पत्ती और आम की पत्ती—इन तीनों को लाकर अलग-२ बिना पानी डाले सिल पर कूट-पीसकर कपड़े में रस निकालो। ईन तीनों पत्तों का स्वरस दो-दो माशे तैयार करके,

इसमें ६ मासे शहद मिलाकर पीने से सब तरह के दस्त बन्द हो जाते हैं।

७— अध-पके बेल को आग में भूनकर उसका गूदा मिश्री और अर्क गुलाव के साथ मिलाकर सबेरे ही खाली पेट में, खाने से सब तरह के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

* अतिसार गजकेसरी *

इन्द्र जौ, मोथा धाय के फूल, कच्ची बेलगिरी, लोध, सोंठ और मोचरस—इन सातों को कूट-पीसकर चूर्ण बनालो। इसकी भी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। यहभी दवा की मात्रा की आधी मिश्री मिलाकर सेवन किया जाता है और ऊपर से २–४ घूंट जल पीना होता है।

* विजयावलेह *

एक भाग भांग, एक भाग जायफल और दो भाग इन्द्र जौ—इन तीनों को कूठ-पीस कपड़छन कर शहद में मिलाकर रख दो। इस अवलेह के चटाने से सब तरह के अतिसार नाश होते हैं।

* बदहज्मी में *

शहद चटाना चाहिये और अर्क पोदीना या अर्क सौंफ मिलाना चाहिये।

* बालकों चौभुजी को (सर्व रोगों में)

काकड़ा सिंगी, अतीस, नागर मोथा और पीपल प्रत्येकको बराबर पीसकर बराबर करके छानले और १ रत्ती मात्रा में शहद के साथ नित्य चटावे।

* मजेदार चूर्ण अनारदाना *

सोड़ा एक तोला खाने वाला, सौंठ एक तोला कालीमिर्च १ तोला, टाटरी १ तोला, नमक १ तोला शक्कर २ तोला—सबको पीसकर चूरन बनालो।

* चूरन *

त्रिफला आधा पाव, सौंफ जीरा सफेद, काला नमक, खटाईआम, नमक-सांभर १-२तोला, नौसादर ६ माशे, हींग ३ माशे—सबको बारीक पीसलें। खाना खाने के बाद थोड़ासा खावें, खाना हजम होगा। पेट दर्द के लिए गरम पानी के साथ खाइये।

* मजेदार चूर्ण (स्वादिष्ट और गुणदायक)

सौंफ ऽ।, भुना जीरा ऽ।, सौंठ ऽ।, भुना धनिया ऽ।।, मिश्री ऽ।।; सतनींबू (टाटरी) ऽ, पीपरमेंट एक तोला को मिलाकर चूर्ण बनालो अच्छा लाभ होगा।

✻ खटमल नष्ट करने को दवा ✻

आइल आफ पेनिरायल एक भाग, टर्पेन्टाइन तेल ४० भाग, मिट्टी का तेल ८० भाग—यह मिश्रण उन दरारों में जिनमें खटमल हों फब्बारे छिड़के।

✻ मच्छर मार तेल ✻

आयल सेट्रोनीला; आयल गल तेरिया रात को सोते समय लगा लो तो मच्छर न आयेंगे। आँखों में नहीं लगाना।

✻ सिर में जूँ ✻

अगर बालक या बालिका के सिर में जूँ पड़ जाय तो कड़वे नीम के बीज पानी में पीसकर सिर में लगाना चाहिये।

✻ मक्खियाँ खत्म ✻

आम के सूखे पत्ते या आस्पन्द जिसको हरमल भी कहते हैं, आग पर रखकर कमरेमें धुआँ करने से मक्खियाँ भाग जाती हैं।

✻ कान दर्द की दवा ✻

१— अदरक का अर्क एक तोले, शहद २ तोले, लाहौरी नमक २ तोला—तीनों को १ छटांक मीठे तेल

में पकावे, सिर्फ तेलमात्र रह जावे तो शीशी में रखले जिस कान में दर्द हो दिन में २-३ बार डालें।

२–कान बहता हो तो नीम के पत्ते साफ करके एक मिट्‌टी के पात्र में डालकर पका लेवें, इसके बाद सुहाती भाप से सेकें; इसके बाद रुईमें पोंछ सुखाकर फिर सेकें, बादमें सरसों का गुनगुना तेल कानमें डाल कर मुँह को चलावें ताकि तेल कान की नसों तक पहुँच जाय। उसके अलावा बादामकी गिरी ७ दाने, बीज निकले हुए मुनक्के ६ दाने, काली मिर्च ७ दाने इनको आधा पाव पानी में रगड़कर शुद्ध घी में छौंके ठण्डा होने पर प्रातः और सायं दोनों समय ७ दिन तक निरन्तर लें। रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

❊ समस्त कर्ण रोगों पर ❊

नीम के पत्ते दो तोले, लहसन ७ दाने, हींग ३ माशा; आकके छोटे-छोटे हरे पत्ते ३, कुचला २ दाने इन सबको कूटकर पानी में टिकिया बनालें। डेढ़ छटांक सरसों का तेल लेकर उसमें उस टिकिया को जलाकर तेल छानकर रखलें। कान के समस्त रोगों से गरम करके दो बूँद रोजाना कानमें डालें, अवश्य लाभ होगा।

* बच्चों के हरे-पीले दस्त *

हरा पोदीना ७ माशे, सफेद जीरा ६ माशे, सुहागा ३ माशे, मुनक्का ५ नग पानीके संयोग से उर्द समान गोलियाँ बना माँ के दूध के संग दे दें।

* ज्वर पर दवायें *

हर की बकली; नागर मोथा; मुलहठी, परवल पत्ते बराबर औटाकर देवें।

* नेत्र दुखने पर पोटली *

नीम, इमली; बबूल, मकोय, नीबू, अनार-इन सबके पत्ते लेकर जौ कूट के इसमें मुर्दासिंग, फिटकरी पठानी लोध; सौंफ, धनिया कूटकर मिला दे और कोरे मिट्टी के बर्तन में रखकर ऊपर की चीजों की पोटली बनाकर भिगो-भिगोकर आँखों पर लगायें। वर्षों दुखती आँखों में आराम होगा।

* हिचकी आना *

अगर हिचकियाँ बहुत ही आती हों और कुछ परेशान हों तो सौंफ और शक्कर को शहद के साथ चटाना चाहिये।

यदि छींकें अधिक आती हों तो धनिया की हरी पत्ती चन्दन चूरा खांड़ के साथ चटाना चाहिये ।

॥ दस्त बन्द की दवा ॥

अतीस, बेलगिरी; इन्द्र जौ, नागर मोथा जायफल; गोंध, बबूल के फूल; पोस्त ले बराबर-२ गोली बनाकर देवें ।

बच्चों का जुकाम और बलगम साफ करने के लिए एक लगा लगाया पान ले लें । उसमें जरा-सा सेंधा नमक, दो-तीन फूल अजवायन और जरा-सी अदरक डालकर लपेट लें, ऊपर एक लौंग से अटका दें । अब इसे कटोरी भर पानी में उबलने को चढ़ा दे, जब पानी पककर १ चायके चम्मच भर रह जाये तो उसे रात को सोते समय बच्चे को पिला दे; इससे बड़ा फायदा होता है ।

॥ लीवर की खराबी; कब्ज तथा पेशाब पीला आने पर ॥

गरम तेल और मिर्च के पदार्थ खाना बन्द कर दें । गन्ने का रस अधिक सेवन करें । भोजन के बाद कुमार्यासव भी लाभकारी होगा ।

॥ पाचन-क्रिया ठीक करने के लिए ॥

नियमित आहार तथा सुपाच्य भोजन मात्रापूर्वक तथा विधिपूर्वक करने से पाचन-क्रिया ठीक रहती है।

॥ भूख न लगने और अरुचि की दवा ॥

भोजन के बाद द्राक्षासव का सेवन दोनों समय किया करें।

॥ पेट में दर्द उठने की दवा ॥

विजौरा नीबू का सेवन प्रतिदिन करना चाहिये। सूत शेखर एवं शंख भस्म दो-दो रत्ती की मात्रा से सुबह – शाम लें। भोजन के बाद कुमार्यासव तथा अमृतारिष्ट मिलाकर सेवन करना चाहिये।

॥ सोते समय मुँह से लार आने की दवा ॥

अजवायन, बायविडंग का सम मात्रा में चूर्ण बनाकर नमक मिलाकर भोजन के बाद सेवन करना चाहिये।

॥ मुँह से दुर्गन्ध आने की दवा ॥

चाक मिट्टी में मात्रानुसार नमक और कपूर मिलाकर रख लें और उससे रोज मंजन किया करें। पिपरमेंट डालकर पान का सेवन करें।

॥ मरोड़ की बीमारी की दवा ॥

इन्द्र जौ का चूर्ण दो माशे की मात्रा से दिन में तीन बार ठण्डे पानी से सेवन किया करें।

॥ जिगर बढ़ने की दवा ॥

भोजन के बाद कुमार्यासव दोनों समय प्रतिदिन सेवन किया करें।

॥ पेट के कीड़ों की दवा ॥

कमीला का चूर्ण बनाकर दिन में दो बार पानी के साथ सेवन करना हितकारी होता है।

॥ मुँह के छालों की दवा ॥

फूला हुआ सुहागा शहद में मिलाकर दिन में दो तीन बार छालों पर लगाया करें।

॥ अधिक भूख लगने की दवा ॥

घी गरम करके भोजन के साथ अधिक मात्रा में सेवन किया करें।

॥ खाने के बाद छाती में बहुत जलन हो तो ॥

हरा धनिया तथा पोदीना—इन दोनों की चटनी बनाकर भोजन के साथ नित्य सेवन किया करें।

॥ पेट की गैस पर ॥

भोजन के बाद दोनों समय हिंग्वाष्ट चूर्ण का सेवन किया करें।

॥ भूख कम लगे और दस्त पतला हो तो ॥

लवण भास्कर चूर्ण दो माशे की मात्रा से छाछ के साथ दिन में दो बार सेवन किया करें।

॥ पेट में कभी-कभी दर्द हो तो ॥

भोजन के बाद हिंग्वाष्टक चूर्ण का सेवन करना चाहिये।

॥ संग्रहणी की बीमारी में दवा ॥

बेलगिरी, सोंठ, भुना जीरा, सौंफ, इन्द्र जौ और कूड़ की छाल का समान मात्रा में चूर्ण बनाकर तीन माशे की मात्रा में दिन में तीन बार छाछ के साथ सेवन करायें। बेसन—मावे आदि के भारी पदार्थ देना बन्द कर दें।

॥ बाल ज्वर अमृत ॥

काकड़ा सिंगी, नागर मोथा, अतीस बराबर ले चूर्ण कर ले। ६ रत्ती से १॥ माशे तक शहद में मिलाकर खिलावें।

॥ मरोड़ी की दवा ॥

ज्यादातर वर्षा से लाल रंग की मरोड़ी खासकर पीठ व छाती पर निकल आती है।

१–मुल्तानी मिट्टी पंसारी के यहाँ से एक पाव लाकर महीन पीसकर मरोड़ी पर पोत देवे। घण्टेभर बाद बदन साफ कर डालें। दिन में ३–४ बार ऐसा करना चाहिये।

२–आँवले की राख, मेंहदी, कबीला और मसूर के छिलकों को बराबर लेकर महीन पीस डालें फिर वनस्पति घी में मिलाकर मरहम-सा बना ले और मरोड़ियों पर लगा देवें।

॥ फोड़–फुन्सी की दवा ॥

घी की लोनी लगाकर ऊपर से मुर्दासंग बुरकने से बहुत शीघ्र लाभ होता है। सामान्य फुन्सियों पर सेलखड़ी को गुलाब के अर्क में घिसकर लेप करें।

॥ घाई (बिवाई) फटना ॥

१–साधारण चूना और सेन्दूर मक्खन के साथ पीसकर लगाने से तुरन्त लाभ होता है।

२–औरत का दूध; गुड़, घी, शहद और गेरु बराबर-बराबर लेकर और मिलाकर लेप करे, पैर कमल जैसे होंगे।

स्त्री-रोग चिकित्सा

॥ गर्भाधान संस्कार का वैज्ञानिक रहस्य ॥

संस्कारों में गर्भाधान संस्कार की गणना प्रथम है जो कि मुख्य और आवश्यक है। यह संस्कार पति पत्नी के विवाहके बाद किया जाता है। यह संस्कार को केवल प्रथम गर्भ के निमित्त को करने का विधान है— 'गर्भाधान प्रथमतः' (व्यास-स्मृति १।१६)।

गर्भाधान संस्कार का विधान धार्मिक सन्तति के उत्पादनार्थ ही लिखा गया है। गर्भाधान संस्कार से पत्नी संस्कृता होती है और वीर्य सम्बन्धी एवं गर्भ सम्बन्धी मलिनता नष्ट होती है तथा क्षेत्र का संस्कार भी गर्भाधान का फल कहा गया है।

निषेकाद् बैजिक फेनो गार्भिक चाप मृज्यते।
क्षेत्र संस्कार सिद्धिश्च गर्भाधान फलं स्मृतम्॥
—स्मृति संग्रह

प्राचीन समय में गर्भाधान संस्कार की प्रथा सभी समाज में और खास कर वैदिक समाज में विशेष

रूप से प्रचलित थी। परन्तु दुःख है कि वैदिक समाज में भी गर्भाधान संस्कार की प्रथा अब प्रायः बन्द-सी हो गई है किन्तु उपयोगिता की दृष्टि से इस संस्कार को पुनरुजीवन करना नितांत अपेक्षित है। यह विश्वास के साथ कहा जा सकताहै। इस संस्कार को पुनः व्यवहारिक रूप देने से अगली पीढ़ीमें तेजस्विता आदि दैवी-सम्पत्ति का निश्चित रूप से आविर्भाव हो सकता है। यौक्तिक दृष्टि से यदि देखा जाय तो इस संस्कार की उपयोगिता अन्य किसी संस्कार से कम नहीं प्रतीत होती। गर्भाधान-संस्कार में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों एवं विनियोगों के भावों से पता चलता हैकि सन्तति को आदर्श बनाने के लिए इसकी नितान्त अपेक्षा है।

गर्भाधान के समय पति-पत्नी का अनेक देवी देवताओं की प्रार्थना करनी पड़ती है। हृदयद्रुत के इस क्षण में दिव्य आत्माओं की भावना से पुत्र को दिव्य बनाना कोई आश्चर्य नहीं है, आजके वैज्ञानिक इसी तत्व को पता लगाकर अपनी रुचि के अनुसार कुत्तों का उत्पादन कराते हैं। जिस कुत्ते की आकृति का पिल्ला उन्हें अभिप्रेत होता है तो उस कुत्ते को

उस कुतिया के आगे बांधे रखते हैं जो अन्य कुत्ते से गर्भाधान करा रही हो। कुतिया उसी बँधे कुत्ते को ही देख पाती है। हृदय द्रुति के उस नाजुक अवसर पर उसका उस कुत्ते की भावना का बड़ा जोरदार असर पड़ता। फल यह होता है कि उसका बच्चा ठीक उसी बँधे कुत्ते की तरह पैदा होता है।

'मार्कण्डेय पुराण' से यह पता चलता है कि एक अप्सरा दैत्य से संगत होने पर भी एक ब्राह्मण के दिव्य रूप का ध्यान कर रही थी, इसलिए उसका पुत्र बड़ा ही तेजस्वी हुआ। आगे चलकर वही 'मनु' बना। इसतरह गर्भाधान संस्कार की यौक्तिक महत्ता स्पष्टहै और इस तरह इसकी उपयोगिता भी अत्यन्त अपेक्षित सिद्ध होती है।

॥ प्रदर पर अमृत ॥

सत् गिलोय ६ तोले, सफेद राल ३ तोले, रुमी मस्तगी ४ तोले, बबूल का गोंद ३ तोला, ईसबगोल २ तोला, बड़ी इलायची के दाने १० तोला, मिश्री २४ तोला—सबको कपड़छन कर ४-५ माशे सुवह-

शाम गाय के दूधके साथ खाने से सब प्रकार के प्रदर सुजाक और मूत्र रोग दूर होते हैं ।

॥ प्रदर की बीमारी में ॥

अशोकारिष्ट भोजन के बाद एक-एक तोले दोनों समय दीजिए । दो-दो माशे तुष्पानुग चूर्ण सुबह-शाम ठण्डे पानी से दें ।

॥ श्वेत प्रदर की बीमारी ॥

असगन्ध, लोध, शतावर, आंवला, अशोक-छाल पाँचों औषधियों को सम-मात्रा में चूर्ण बनाकर तीन माशे की मात्रा से सुबह–शाम रात को दूध के साथ सेवन करें । खट्ठे पदार्थों और तेल–मिर्च एवं चाय का निषिद्ध है ।

॥ सफेद प्रदर ॥

पठानी लोध ऽ, समुन्द्र शोंप ऽ, मिश्री ऽ।, सबको कूट कपड़ा में छानकर आधा तोला पानी के साथ २१ दिन सेवन करें; प्रदर में आराम होगा ।

॥ श्वेत प्रदर ॥

पठानी लोध ५०० ग्रा०; समुद्र शोष ५०० ग्रा०

मिश्री १०० ग्रा०, सबको कूटकर कपड़ा में छानकर आधा तोला जल के साथ २१ दिन सेवन करे ।

॥ श्वेत प्रदर ॥

नाग केसर को पीसकर और छाछ मिलाकर तीन दिन पीने से श्वेत प्रदर में आराम होता है। केवल मट्ठा पीने से भी आराम हो जाता है ।

१—मथुए की जड़ को दूध या पानी में पकाकर ३ दिन के सेवन से प्रदर रोग चला जाता है ।

२—नाग केसर चावलों के धोवन के साथ पीसकर और चीनी मिलाकर पीने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है ।

॥ प्रदर की बीमारी ॥

गरम; खट्ठी, तेल और मिर्च की वस्तुओं का सेवन बन्द कर दें । साथ ही चाय का सेवन भी बन्द करना आवश्यक है । चन्द्र प्रभा की २-२ गोली दिन में दो बार दूध के साथ ले लिया करें ।

॥ सिर दर्द पर ॥

पिप्पलामूल का चूर्ण ४ रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम शहद के साथ सेवन करना लाभकारी होगा ।

।। अपेन्डिसाइटिस की बीमारी ।।

हल्का भोजन एवं पतले पदार्थों का सेवन करे। भारी कठोर पदार्थ त्याग दें, पेट साफ रखें। हरड इसबगोल को रात को गरम पानी से सेवन करें। व्यायाम; दौड़; वजन उठाना आदि त्यागदें, निम्बादि चूर्ण ३-३ माशे सुबह-शाम ठण्डे पानी से और आरोग्यवर्द्धिनी ३ रत्ती और शंख भस्म दो रत्ती दो बार नियमित रूप से सेवन करते रहें।

।। मासिक धर्म कम हो तो ।।

खून की कमी के कारण भी ऐसा हो सकता है। आपको ऐसी अवस्था में शक्तिवर्धक खान-पान के उपाय करना चाहिए।

।। मासिक-धर्म बराबर न आने से ।।

'रजः प्रवर्तिनी वट' की २-२ गोलियाँ सुबह-शाम गर्म पानी के साथ सेवन करनी चाहिए।

।। रज-शोधक ।।

५ अदद गुड़हल के फूलों को पाव भर जल में पकावे। जब एक छटांक जल बाकी रहे तब उसमें

१ तोला शहद मिलाकर कुछ दिन पीने से मासिक-धर्म ठीक हो जाता है।

नालांगनी के पत्तों की राख करके ४ माशे प्रतिदिन ठण्डे पानी के साथ घोलकर पीने से भी मासिक धर्म ठीक समय होने लगता है।

॥ नींद के अभाव में ॥

ब्राह्मी और जंटामाशी का चूर्ण मिलाकर तीन माशे की मात्रा में दूध से सुबह और रात को सेवन करना चाहिये।

॥ निर्बलता पर दवा ॥

स्वर्ण वसन्त मालती रस १-१ रत्ती प्रायः सायं दूध से तथा अग्नितुण्डो बटी जलसे सेवन कीजिए।

॥ ब्लडप्रेशर की बीमारी पर ॥

सर्पगंधा, असगंध और गिलोय— इनको समान मात्रा में चूर्ण बनाकर २ माशे की मात्रा सुबह-शाम ठण्डे पानी से सेवन करना चाहिये।

॥ मासिक-धर्म बीस दिन से हो तो ॥

प्रदरामृत चूर्ण २ माशे की मात्र से दिन में २ बार खाने के बाद सेवन किया करें।

।। शक्तिवर्द्धक दवा ।।

ताम्र भस्म आधा रत्ती, प्रवाल भस्म १ रत्ती तथा १तोला च्यवनप्राश को दूध के साथ प्रात;-सायं सेवन कीजिए ।

।। बांझ स्त्री पुत्रवती हो ।।

ढाक वृक्ष का पत्ता लेकर गर्भिनी स्त्री के दूध में उसको पीसकर ऋतुकाल के अन्त में बांझ स्त्री को पिलावे और पति प्रसंग करे तो बांझ स्त्री गर्भ को धारण करे ।

विष्णुकांता की जड़ बकरी के दूध के साथ ऋतु-स्नान के बाद ३ दिन स्त्री पीवे और पति-प्रसंग करे तो स्त्री गर्भ धारण करे ।

पहिले पुत्रवती होकर वन्ध्या हो जाने तो विष्णु कांता को जड़ सहित लेकर भैंस के दूध के साथ ऋतु-काल के समय से ७ दिन तक लगातार पीवे या मक्खन के साथ खावे, शतावर चूर्ण फांककर ऊपर से दूध पीवें ।

।। योनि संकोचन ।।

भांग की पोटली बनाकर योनि में ३-४ घण्टे रखें प्रसूता की योनि कन्या जैसी हो जाती है । पीस

मोचरस को पीस छानकर ३-४ घण्टे तक लगा रखने से योनि सिकुड़ जाती है।

॥ स्त्री रक्त स्तम्भन योग ॥

योनि से खून अधिक गिरता हो तो कबूतर की बीट को चावलों के धोये हुए पानी में मिलाकर सेवन करावे तो खून बन्द हो जाता है।

॥ योनि सूल ॥

एरंड और नीम के बीजों का नीम की छाल के स्वरस में घोटकर गोली बनावे, इसको योनिमें रखने से योनि शूल नहीं होता है।

॥ दूध बढ़े ॥

बिदारी कन्द की जड़ को दूध में पीस मिश्री को मिलाकर पीने से दूध अधिक बढ़े।

२–शतावरी को दूध में पीसकर पीवे।

३–पीपल को दूध में डालकर पीवे।

॥ हिस्टीरिया ॥

केशर ३ माशा; जावित्री ३ माशा, जायफल ६ माशा, पीपल ६ माशा, अदरख १ तोला, असगंध ६ माशा, भांग के पत्ते ५ तोला कूट-पीसकर उर्द समान

गोलियाँ बना ले; पान में रखकर सुबह-शाम १-२ गोली देवे।

हरे चिरचिटे की जड़ ४ रत्ती, काली मिर्च ४ रत्ती, दोनों को एकत्र जल में पीसकर प्रातःकाल के समय ७ दिन तक पानी से लेवें।

॥ कुचकल्प तेल ॥

केवड़ा जड़ २ तोला, हल्दी २ तोला, वच २ तोला, कुटल छाल २ तोला, अनार फल कच्चा १ तोला, दूध ॥, तिल तेल ।, लज्जालु २ तोला, असगंध २ तोला तेल पाक करले। यह तेल स्तनों को कठोर व सुन्दर बनाता है।

॥ स्तनबर्द्धक ॥

श्रीपर्ण के रस और काढ़ा को डालकर तेल शुद्ध करे फिर उस तेल की रुई में लगाकर स्तनों के ऊपर रखने से स्तन हाथी-मस्तक के समान खड़े होते हैं।

२-नागवला (कंगही) की जड़ को पीसके स्तनों पर मालिश करने से स्तन कठोर, पुष्ट और खड़े हो जाते हैं।

३-कमलागट्टे का चूर्ण, मिश्री मिला दूध और

जल के साथ १ महीने खाये तो स्त्री के दोनों स्तन कठोर हो जावे।

४—स्तन-पीड़ा इन्द्रायन की जड़ का लेप करे।

॥ मासिक-धर्म १५-१५ दिन में हो तो ॥

अशोक की छाल; नागकेशर, गिलोय और लोध को समान मात्रा में चूर्ण करके रख ले। चार आने भर की मात्रा में दिन में २—३ बार ठण्डे पानी से सेवन किया करें।

॥ प्रदर-नाशक ॥

२ तोला अशोक की छाल गाय के दुध में पकाकर मिश्री मिलाकर सुबह—शाम दोनों समय लगातार कुछ दिन पीने से घोर रक्त प्रदर में निश्चय ही आराम होता है।

॥ मासिक-धर्म के समय शरीर में दर्द—बेहोशी ॥

अमर सुन्दर वटी की २—२ गोलियां दिन में २ बार दुध के साथ सेवन किया करें।

॥ श्वेत प्रदर की बीमारी ॥

अधिक खट्ठे पदार्थों एवं तेल, मिर्च के पदार्थों का अत्यधिक मात्रा में सेवन, अशुद्ध घी का प्रयोग मन को दुषित करने वाले चलचित्र देखना, अश्लील

गीत सुनना तथा पौष्टिक आहारों का अभाव एवं शारीरिक परिश्रम न करना भी इस रोग की उत्पत्ति में सहायक होता है ।

।। मासिक धर्म अधिक मात्रा में जाता हो तो ।।

अशोक की छाल, नाग केशर; खूनखराबा लोध और गिलोय का चुर्ण बनाकर दो माशे की मात्रा में सुबह-शाम पानी के साथ सेवन किया करे । गरम वस्तुयें न खायें ।

।। उफ ! यह सिर दर्द ।।

सिर दर्द नसों की पीड़ा

असली घी एक-दो तोले की मात्रा में अधिक गर्म करके दूध में मिलाकर प्रतिदिन सुबह सेवन कर लिया करें ।

।। चक्कर आने की बीमारी ।।

आप प्रतिदिन प्रातः काल में आँवले का मुरब्बा सेवन किया करें ।

।। पित्ती की दवा ।।

सौंठ; काली मिर्च, पीपल, गेरू को १-१ तोला पीस-छानकर ३ माशा सुबह-शाम और ३ माशा २ तोला शहद में मिलाकर ७ दिन तक चाय के साथ

खावे, गरम पानी से नहावे, खटाई का परहेज करें। पत्ती को धरफिटर भी कहते हैं।

॥ दोनों पैर भारी और मोटे हों तो ॥

पुनर्नवादि काढ़े को १ तोला लेकर २ कप पानी में गरम करे। आधा कप शेष रहे तो छानकर पिवा दे। इस प्रकार दिन में दो बार देना चाहिऐ।

॥ लकवा मारने पर ॥

इस रोग में अधिक उष्ण वाले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। विशगर्भ तेल की मालिश तथा खाने में एकांगवीर रस दिन में दो बार दूध के साथ सेवन करना चाहिए।

॥ दौरे पड़ने की बीमारी ॥

असगन्ध और वच का चूर्ण बनाकर ३ माशे की मात्रा से सुबह-शाम दुध से तथा दशमूलारिष्ट मिला कर भोजन के बाद दोनों समय सेवन किया करें।

॥ सरस्वती चूर्ण ॥

कूठ, कालीमिर्च, असगंग, सफेद जीरा, स्याह जीरा, सोंठ, पीपल और हल्दी १-१ तोला ले चूर्ण बनाकर

शहद के साथ खाने से बुद्धि निर्मल होती और विद्या आती है ।

॥ केश बर्द्धन ॥

गोखरु और तिल के फूलों को बराबर लें और चुर्णकर समान घी और शहद में फेंट कर लगावे तो बाल बड़े हो जावें ।

॥ बाल उगना ॥

हाथी दांत को जलाकर रसोत और बकरी के दूध में पीसकर लेप करे तो जहाँ बाल न हों वहाँ भी बाल उगेंगे ।

॥ फल घृत योनि दोष नाशक ॥

कट सरैया, गुर्च-गदा; पुरैना (मरुआ) सिरसा दोनों हल्दी—रासना-गेदा-सतावर इनका १ सेर काढ़ा करके ४ सेर घी में पकावे, जब केवल घी रह जावे तो इसे स्त्री पान करे, योनि-रोग नष्ट हो जाते हैं ।

॥ अकसीर अर्क ॥

[बाल काले, यकृत प्रमेह, शीघ्र पतन, लिवर]

कीकर की फलियाँ ३ सेर (बीज कड़े न हों), इन्हें २० सेर पानी में डाले (मटके में ऽ।। लोह चुर्ण भी डाले, २० दिन धूप में रक्खें) तीसरे दिन बबूल

की लकड़ी से हिला दिया करें; २१ वें दिन पानी को नितार कर बोतल में भर लें। इसे १॥ छटांक से ३ छटांक तक सेवन करें।

॥ बाल काले होने की दवा ॥

मूंडी के फूल जब तक पक जावें तो छाया में सुखालें। ३ माशे रोज पानी के साथ ६ महीने सेवन करे, आयुभर बाल सफेद न होंगे, घी अधिक खावें।

॥ पेन बाम ॥

(सिर-दर्द की बढ़िया दवाई)

मोम ११० ग्राम, नारियल का तेल २०० ग्राम, पीपरमेंट १५ ग्राम, दालचीनी का तेल ५ ग्राम, लौंग का तेल २॥ ग्राम; लवेन्डर २॥ ग्राम। पहले मोम और नारियल तेल पिघला ले, फिर सबको मिलाकर खरल कर शीशियों में भर लें।

॥ सिर दर्द का अचूक मल्लहम ॥

५० ग्राम दालचीनी लेकर अच्छी तरह कूट-छान कर बराबर के घी में मिला कढ़ाई में डाल पक जाने पर १०ग्राम कपूर भी डाल दें। इस मरहम से कैसा भी सिरदर्द क्यों न हो, शर्तिया जाता रहेगा।

मोम ११० ग्राम, नारियल का तेल २०० ग्राम, पोदीने का सत् १५ ग्राम, दालचीनी का तेल ५ ग्राम, लौंग का तेल २॥ ग्राम । मोम और नारियल के तेल को आपस में मिलाकर उसे खरल डाले और बाकी चीजें भी खरल में डालकर खूब घोंट डाले । इसे शीशियों में भरकर रखलें । वक्त जरूरत पर काम में लायें ।

॥ सिर दर्द का अचूक मल्हम ॥

२० ग्राम दालचीनी को लेकर अच्छी तरह कूट-छानकर बराबर के घी में मिला कढ़ाई में पका लें, पक जानेपर १ तोला कपूर भी डाल दे। इस मल्हम से किसी तरह का सिरदर्द शर्तिया मिट जाता है ।

॥ तुलसी की चाय ॥

पवित्र सर्वगुण सम्पन्न संजीवनी सुधामयी बूटी की प्रचुर मात्रा के साथ ब्राह्मी एवं अन्य गुणकारी जड़ी-बूटियों का सम्मिश्रण एक स्वर्गीय और स्वास्थ्य-वर्द्धक पेय है ।

।। मूर्छा रोग ।।

१—घी में भूनकर पेठे की तरकारी खाने से ठीक हो जाता है ।

२—मस्तक और आँखों पर गुलाब-जल के छींटा देने से गर्मी की बेहोशी दूर होती है ।

३—पीपल पानी में घिस कर आँख और कान में लगावें ।

४—प्याज का रस सुंघाने से दूर होती है ।

५—बादाम का तेल सिर पर मलें, सिरस-बीज, काली मिर्च बराबर-२ लेकर सेवन करें ।

६—अदरख, सहिजन की छाल, सरसों— तीनों पीसकर गोली बना गौ मूत्र के साथ खाने से गुल्म तथा वायु गोला का दर्द खत्म होता है ।

७—नीबू का रस, हींग, अनारदाने, विड नमक; सेंधा नमक को मिला कर पीने से गुल्म शूल मिट जाता है ।

८—भुनी हींग ६ माशे, बच २ माशे, विड नमक ३ माशे, सोंठ ४ माशे, जीरा ५ माशे, हरीतकी ६ माशे की गोली बनालो; दो-दो घण्टे पर देने से ज्वर रोग दूर हो जाता है ।

९– काला नमक और कायफल का चूर्ण मिला कर खाने से उदर पीड़ा खत्म होती है ।

१०–संधा नमक, काला नमक, अजवायन; सोंठ और कुलिजन का चूर्ण बरबर भाग लेकर गर्म जल के साथ गोली बनावे । इससे उदर पीड़ा, अन्दाग्नि दूर होगी ।

॥ सुलेमानी चूर्ण ॥

काला नमक १ तोला, साभर नमक १ तोला, सेंधा नमक १ तोला, शुद्ध किया नौसादर १ तोला; लौंग, बड़ी इलायची, तेजपाल; मुलहठी, काली-मिर्चा, सफेद जीरा, सौंठ, दालचीनी तेजपात—ये सब ६–६ माशे बारीक पीसकर कपड़छन करके बोतल में भरकर रख लो ।

॥ नौसादर शुद्ध करना ॥

जितना नौसादर हो उसमें चौगुना पानी लेकर गर्म करें, जब सब पानी जल जाय तो शुद्ध नौसादर रह जायेगा, लोहे के बर्तन में गर्म करना चाहिये ।

॥ क्षुदा वर्द्धक ॥

सेंधा नमक, हरड सजी, जबाखर, सोंचर नमक, सागर नमक, खारी नमक; सोंठ, जीरा, मोथा,

अजमायन, पीपल, काली मिर्च, चीते की छाल, अजमोद, वायविडंग; धनिया तितरीक, बराबर ले कपड़छन कर और अदरख के रस में गोली बना दें १-१ गोली रोज खाने से अन्न पचे।

॥ पाचक गोली ॥

२०० ग्राम आक की मुँहबन्द कली; २०० ग्राम काली मिर्च, सेंधा नमक दो पैसे भर सबको मिला महीन पीसकर बेर के समान गोली जलके साथ खाने से अजीर्ण, अफरा आदि उदर रोग दूर होगा।

॥ मजेदार चूर्ण ॥
(स्वादिष्ट और गुणदायक)

सौंफ २०० ग्राम, भुना जीरा २०० ग्राम, सौंठ २०० ग्राम, भुना धनिया ४०० ग्राम, मिश्री ४०० ग्राम, सात नींबू, टाइट्री ५० ग्राम, पीपरमेंट १आना को मिलाकर चूर्ण बना लो, अच्छा फायदा होगा।

॥ सुन्दरता के रक्षक बाल ॥

मनुष्य के शरीर की रचना ही इस प्रकार की है कि उसके प्रत्येक भाग और अंग का कुछ न कुछ उपयोग है। यही बात शरीर के बालों के सम्बन्ध में भी मानी जाती है। शरीर के विभिन्न अंगों पर भी

बाल होते हैं । यही बात शरीर के बालों के सम्बन्ध में मानी जाती है । शरीर के विभिन्न अंगों पर जो बाल होते हैं उनकी उपयोगिता भी विभिन्न प्रकार की होती है इसलिए उनका रक्षण होना ही चाहिए। बालों का पोषण रक्तसे होने के कारण इनका अधिक होना स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकर भी होता है। इसलिए पुरुषों के सिर पर बाल एक-दो इन्च से अधिक लम्बे नहीं होने चाहिए । स्त्रियों के लिए तो बाल सौन्दर्य के अंगहैं, अतः उनकी रक्षा और संवर्धन उसके लिए आवश्यक है ।

॥ स्नान विधि ॥

हमारे शरीर की त्वचा में चिकनाई बनाने बाली ग्रन्थियां होती हैं जो अपनी चिकनाई से बालों को पोषण करती हैं और कोमल रहती हैं तथा हमेशा बढ़ते रहते हैं। अलग-अलग स्थान की ग्रन्थियों में शक्ति कम और अधिक रहती है जिससे कहीं बालों वृद्धि तेजी से होती है और कहीं अति मन्द गति से । इसका पोषण रक्त द्वारा ही होता है । खून का दौरा यदि ठीक प्रकार से हो तो बाल शीघ्र बढ़ते हैं और कोमल तथा चमकदार रहते हैं ।

साबुनसे बालों की चिकनाई धुल जातीहै जिससे बेरुखे लगतेहैं अतः ऐसी अवस्था जबकि साबुन बालों पर लगाया हो थोड़ा तेल भी लगा लेना चाहिए। तेल नहाने के पहले लगाकर स्नान करें।

बाद में तौलिये से बालों को पोंछ लेना चाहिये। अधिक देर भीगे रहने से बाल कमजोर हो जाते हैं जिससे वे शीघ्र टूटने लगते हैं।

साबुन के अतिरिक्त अन्य अति लाभकारी द्रव्यों में दही, रीठा; मुलतानी मिट्टी के प्रयोग हैं जिनसे बाल कोमल और घने बनते हैं।

॥ स्वरूप ॥

अब आपके सामने यह प्रश्न खड़ा हो गया होगा कि यदि बाल इतने उपयोगी हैं तो इन्हें काटना नहीं चाहिए। इस विषयमें आपको यह जानना आवश्यक है कि जितने अधिक बाल शरीर पर होंगे। अधिक रक्त उनके पोषण में कम होगा।

॥ तपेदिक ॥

१–अष्टवर्ग इस रोग को नष्ठ करता है।

२–मुलेठी और लाल चन्दन दूध में मिलाकर पीने से रक्त का वमन बन्द होगा।

३–मक्खन, शक्कर, शहद खाने वाला क्षय रोग पुष्ट होगा।

४–जीवन्ती, मुलेठी, पुष्कर मूल, दूध के फेन से खावे।

५–छोटी इलायची १ तोला; पीपर २ तोला, वंशलोचन ४ तोला, मिश्री ४ तोला, दालचीनी आधा तोला।

॥ आवाज फट जाने पर ॥

मुलहठी का सत्व ४ तोला, खैरसार ६ तोला, आँवला १ तोला व छोटी इलायची आधा तोला को बारीक चूर्ण बनाकर गुलाब जल में खूब मिलाकर खरल में छोड़कर छोटी-छोटी गोली बनाकर लें तथा सुखाकर शीशी में रखलें और उनको ही मुख में रख कर रस चूसने से आपको शिकायत दूर होगी।

॥ आवाज धीमी हो ॥

मुँह में कुलिजन रखकर उसका रस चूसा करें।

॥ खाँसी का दौरा ॥

प्रवाल भस्म १ रत्ती, तालीसादि चूर्ण तथा सोमलता चूर्ण १–१ माशा दिन में ४ बार शहद से सेवन कीजिये।

॥ फुन्सियाँ निकलने पर ॥

बादाम तेल की मुख मंडल पर मालिश कीजिये, कुछदिन बाद त्वचा का रंग स्वाभाविक हो जायेगा।

॥ मुँह तथा शरीर पर बाल आना ॥

बेसन का उबटन बनाकर शरीर तथा मुँह पर अच्छीतरह मालिश करे और तब स्नान किया करें।

॥ चेहरे पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ ॥

गरम तथा खट्टे पदार्थों का सेवन करना बन्द करके नीम की छाल अन्दर की ओर से चन्दन की तरह घिसकर मुँह पर लेप किया करें।

॥ ब्लैडप्रेशर पर ॥

गुलकन्द रोज दिन में दो बार खाया करें।

॥ पित्ती निकलती हो ॥

आरोग्यवर्धिनी ४ रत्ती, गिलोय सत्व ६ रत्ती, प्रबाल भस्म ४ रत्ती की दो पुड़िया बनाकर सुबह ठंडे पानी से और मंजिष्ठादि चूर्ण दो-दो माशा दिन में दो ठंडे पानी से लें।

॥ हाथ पैर सें पसीना बहुत आता हो ॥

सरसों के तेल में पानी मिलाकर हथेली एवं

पैर के तलुओं पर मालिश करना विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

दायें की अपेक्षा बाया अंग स्वयंमेव तुलनात्मक रूप से किंचित् निर्बल होता है; किन्तु आपकी दृष्टि अधिक कमजोर दिखाई देती है, प्रातः-सायं त्रिफला घृत १-२ तोला को गर्म दूधसे सेवन कीजिये, त्रिफला जल से नेत्र प्रक्षालन कीजिये। पुनर्नवार्क को नेत्रों में नियमित डालिये।

॥ सिर में फुन्सियाँ ॥

चालमोगरा का तेल और तिली का समभाग मिलाकर चूनेके पानीमें मथ लें, जब सफेद गाढ़ा द्रव तैयार हो जाय तब सिर पर नियमित रूप लगायें लाभ होगा।

॥ पीलिया रोग ॥

पुनर्नवादिमंडूर २-२ माशे प्रात-सायं पुनर्नवादि क्वाथ प्रवाही के साथ करे।

॥ गर्भ निरोध ॥

घोड़े की लीद स्त्री की योनि के आगे जलाने और उसका धुँआ लेने से गर्भ गिर जायेगा।

२—ऊँट कटारे की जड़ पानी में पीसकर स्त्री के पेट पर लेप करने से गर्भ गिर जायेगा।

३—साबुन को कड़वे तेल में मिलाकर उसमें रुई भिगोकर स्त्री धरनके मुँहमें रखेतो गर्भ गिर जायेगा।

४—गाजर के बीज; मूली के बीज, मेथी दाना तीनों का काढ़ा बनाकर गुड़ मिलाकर पीवे।

५—बायें हाथ में मकनातीसी रखने से स्त्री के तुरन्त बच्चा हो जाता है।

शहद, घी, चूना, बराबर- बराबर मिला बिच्छू काटे पर लगावे।

गुड़हल के फूल जलके साथ पीस नाभि के चारों तरफ लेप करने से गर्भ गिरेगा।

घोड़े की लीद योनि के सामने जलाने या धूनी देने से जीते हुए अथवा मरे बच्चे फौरन ही निकल आते हैं।

गाजर के बीज, मेथीके बीज और सोये के बीज तीनों २६-२६ माशे २ सेर पानी में औटाओ; सेरभर रहे तो छानकर २६ दिन पीवे तो गर्भ गिरे।

नोट—गर्भ गिर जाने पर घी में फाया भिगोकर गर्भाशयमें रखदो पीड़ा दूर होगी, कुछ खाने को नहीं

केवल खरबूजे के बीज १ तोले; सौंफ १ तोले, गोखरु ६ माशे मिश्री मिला औटाकर लेवें ।

बथुए के बीज १।। तोले, ।। सेर जल में औटा कर काढ़ा करे; आधा पानी रहे तब छानकर पीने से अवश्य गर्भ गिर जाता है (अति उत्तम प्रयोग) ।

सहजने की छाल और पुराना गुड़ औटाकर पीने से गर्भ गिरजाता और झिल्ली आदि निकल आतीहै ।

जंगली कबूतर की बीट और गाजर के बीज बराबर-बराबर आग पर डालकर योनि में धूनी देने से गर्भ गिर जात. है ।

केवल गाजर के बीज सिल पर पीसकर पानी में छानलें, स्त्री को पिलाने से बन्द हुआ मासिक धर्म पुनः शुरू हो जावेगा ।

स्तन सूजन पर घी ग्वार के पाठे के रसमें हल्दी का चूर्ण डालकर गरम करले फिर सुपाता-२ स्तनों की सूजन पर लेप करे, सूजन फौरन उतर जावेगी ।

यदि स्तनों में खुजली, फोड़ा; गाँठ या सूजन हों तो १०८ बार धोये हुए मक्खन में मुर्दासिंग और सिन्दूर पीस-छानकर मिला दे फिर २१ बार धोये, इसके बाद स्तनों पै लगा दे इससे फोड़े-फुन्सी और

घाव में आराम हो जाता है।

॥ दांतों में कीड़ा लगने पर ॥

छेद में कपूर भरदें या गंधक सिरके में मिलाकर रुई या फाया उस स्थानपर रखदे, कीड़ा मर जायेगा और छिद्र भर जायेगा।

॥ दांतों के हर रोग पर ॥

एक प्याली में पानी और दो चम्मच सेंधा नमक मिलाकर नित्य कुल्ला करने से दांतों के हर तरह के रोग नष्ट होते हैं।

॥ पायेरिया ॥

लौंकिया सुहागा (भूनकर) बराबर शहदके साथ सेवन करे।

॥ बढ़िया दांत सफा ॥

खड़िया मिट्टी ऽ।। पीसकर इलायची का तेल आधा तोला; मुक्तिमासा आयल आधा तोला, गुलाबी रंग आधा तोला।

॥ दांत सफा ॥

खड़िया मिट्टी ऽ।। पीस कर इलायची का तेल आधा तोला, यूकेलिपटस आयल आधा तोला, गुलाबी रंग आधा तोला, बढ़िया मंजन तैयार होगा।

॥ पायेरिया नाशक रामबाण औषधि ॥

नीम के पत्ते १ सेर, फिटकरी १० तोला, दोनों को मटकी में बन्द कर कण्डों की आँच में भस्म करले और पीस-छानकर रखलें।

॥ देशी मंजन का नुस्खा ॥

कत्था १ तोला, मस्तगी १ तोला, अकरकरा १ तोला, सौंठ १ तोला; जीरा भुना १ तोला, नीला थोथा (पका हुआ) ३ माशा, कपीश १ तोला, धनिया १ तोला; सेंधा नमक १ तोला, सुपारी की राख १ तोला लेकर कूट-छानकर रखलें।

॥ दाँतों के रोग ॥

गेरू, फिटकरी, छोटी इलायची पीसकर सुबह मंजन करें।

॥ सर्वोत्कृष्ट सस्ता मंजन ॥

खूब धोकर सुखाये बल बबूल के कोयले का महीन चूर्ण ६ हिस्से, फिटकरी का कपड़छन चूर्ण ३ हिस्से, सेंधा नमक ३ हिस्से, कपूर १॥ हिस्सा सबका कपड़-छन चूर्ण मिलाकर शीशी में भरलो। सुबह-साम इस मंजन से दाँत घिसे और उबलता हुआ पानी लेकर उसमें दो रत्ती फिटकरी चूर्ण डालें, जब फिटकरी

घुल जाय तो उस पानी से कुल्ले करे, दांत मजबूत और स्वच्छ रहेंगे ।

।। दांत सफा मंजन ।।

खाने का सोडा	१ पाउन्ड
पिसा नमक	१ पाउन्ड
तुमरू के बीज	१ पाउन्ड

तीनों चीजें मिला लें, मंजन बन जायेगा ।

।। दांत का मंजन ।।

त्रिफला, त्रिकुटा; फिटकरी, पांचोंनोंन, पतंग, माजूफल सब बराबर वजन में लें । नीलाथोथा भुना एक चीज का चौथा भाग पीसकर रखलो, इससे दांत-दर्द पानी लगना, हिलना, मसूड़ों का अलग होना सबदूर होंगे । नित्य से दांतों में कोई रोग न होगा ।

।। सुगन्धित और लाभदायक मंजन ।।

फिटकरी, सौंठ, मस्तगी, अकरकरा, जावित्री, जायफल, कालीमिर्च; दालचीनी, छोटी इलायची ३-३ माशे, केशर २माशे, कपूर २माशे खड़िया मिट्टी बारीक पिसी हुई और धुली हुई पाव-भर, सबको कपड़छन कर बन्द बोतल में रखलो । चाक मिट्टी छुपाने के लिए एक रंग दे देना अच्छा है ।

यदि दांत में कीड़ा लगने से छेद हो गया हो तो उसमें कपूर भरदें या थोड़ा-सा गंधक सिरकेमें मिला कर रुई का एक फाया एक स्थान पर रखवें; कीड़ा मर जायेंगे और छेद भर जायेगा।

एक अमरीकी दन्त विशेषज्ञ का कहना है– एक प्याली में और दो चम्मच सेंधा नमक मिला कर नित्य कुल्ला करने से दांतोंके हर प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

॥ ज्वर ॥

१–नवीन ज्वर में औषधि न दें, सात दिन बाद दवा देनी चाहिये, इतवार को भांगकी जड़ उखाड़कर गले में बांधने से भूत ज्वर छूट जाता है।

२– दो माशे गुड़ १ माशे भाँग की गोली बना कर एक घण्टा पहले सेवन करने से जड़ैया बुखार नहीं आता है।

३– दो भाग गुड़ एक भाग पीपल का चूर्ण आधे तोले की गोले बनाकर खानेसे जीर्णज्वर दूर होगा।

४–३ रत्ती काली मिर्च और १ रत्ती नौसादर का चूर्ण पान में खाने से ज्वर टूट जाता है।

५–शहद के साथ ६ माशे निसोत का चूर्ण खाने से विषम ज्वर खत्म होता है।

६–२१ दाना काली मिर्च; ४ माशे नीम की कोमल पत्ती की गोली बनाकर ज्वर आने से १ घन्टा पहिले खिलाने से शीत ज्वर आता हुआ रुक जाता है।

७–३ माशे अतीस का चूर्ण दूब के रस में पोने से बारी से आने वाला ज्वर खत्म होता है।

गूता के पत्तों का रस काली मिर्च के साथ पीने से विषम ज्वर दूर होगा।

८–मुंडी का ६ माशे चूर्ण, २१ काली मिर्च के साथ खाने से जीर्ण ज्वर अच्छा हो जाता है। मुंडी का चुर्ण ५ माशे खाकर ऊपरसे बकरी का दूध पीपे तो तिजारी ज्वर जाता रहेगा।

९–६माशे अतीस का चूरन खानेसे पेट की गर्मी तुरन्त दूर होगी।

१०–मदार की जड़की छाल दो रत्ती पान खाने से बारी से आने वाला ज्वर दूर होगा।

११–मदार की जड़-छाल दो भाग, काली मिर्च १ भाग पीसकर मटर के बराबर गोली ज्वर आने से पहिले गर्म पानी के साथ देने से ज्वर अच्छा होगा।

१२–मदार के पीले पत्ते आग में जलाकर भस्म

करलें; शहद के साथ आधा माशे सेवन करने से शीत ज्वर तत्काल छूट जाता है ।

॥ बिसूचिका ॥

१—अर्क कपूर लाभकारी २—चिरचिरे की जड़ पुदीना के अर्क में पीसकर देने से हैजा रुक जाता है । ३—अजवायन का सत, कपूर, पिपर मैं तीनों को एक शीशी तथा लौंगके काढ़ेमें पिलाओ हैजा दूर होगा ।

४—आदिफैन आसव बड़ा उपयोगी ।

॥ मस्तक पर फुन्सियों पर ॥

बाललो तेल और चाल मोशरा तेल को समान मात्रामें मिलाकर रोगाक्रांत त्वचा पर लगाइये, नमक और तेल—गुड़ के पदार्थों से परहेज कीजिये । साबुन बजाय दही या मुलतानी मिट्टी से स्नान कीजिये ।

॥ मियादी बुखार (टाईफाइड)

खान-पान की गड़बड़ी के कारण आंतों के विकृत होने पर यह रोग होता है ।

इस रोगमें सर्वप्रथम शरीर टूटता है, मंद बुखार प्रतीत होताहै और मन अस्वस्थ सा रहता है । इसके इसके बाद बुखार बढ़ने लगता है और सुबह तथा

शाम को तापमान में १-१।। अंश का अन्तर रहताहै। २-३ दिन में ही बुखार १०३-१०४ अंश तक लगता है जो सुबह कम और शाम को अधिक होता है। पेट में दर्द और भारीपन होता है। कभी कभी सिर में दर्द होता है, जीभ मैली व सफेद हो जाती है और उसके किनारे लाल से दिखाई देने लगते हैं। प्राचीन मत से यह बुखार सात दिन, दस दिन; बारह दिन और २१ दिन का होता है। आधुनिक मत से भी ७ दिन का बुखार पैराटायफायड और इक्कीस दिन का टायफायड कहलाता है।

॥ उपद्रव ॥

इस रोग में अधिक दस्त होना या दस्त में खून जाना आदि बुरे लक्षण माने जाते हैं।

॥ बचने के उपाय ॥

१-टी ए वी का इंजेक्शन लगवाने से एक वर्ष तक इस रोगसे बच सकतेहैं। २-खाने-पीनेकी वस्तुयें पूर्ण स्वच्छ होनी चाहिए। बाजारू और सड़कों पर खुली रखके बेची जानेवाली चीजोंसे बचना चाहिए। ३-मक्खियों से भोजन को बचाके रखें। ४-दूध को कच्चा नहीं पीना चाहिये। ५-रोग-ग्रस्त घर के

आहार व जल से बचाव रखना चाहिये। ६—आइस-क्रीम आदि नहीं खाना चाहिए।

॥ आहार ॥

इस रोग में द्रव्य पदार्थ ही अधिक मात्रा में लेने चाहिए, दूध मौसमी का रस चाय और काफी लेनी चाहिए, फलों में पपीता तथा चीकू ले सकते हैं। लौंग डालकर उबाला हुआ पानी ठंडाकर रखलें, वह रोगी को सारे दिन थोड़ा-थोड़ा दें।

॥ रोगी को कैसे रखें ॥

१—रोगी को एकांत कमरे में स्वच्छता पूर्वक रखना चाहिए। कमरा हवादार होना चाहिये। २—रोगी को शय्या पर ही मल-मूत्र कराना चाहिए और मल-मूत्र को राख से ढक देना चाहिए। ३—उसके कपड़े गर्म पानी से स्वच्छ करने चाहिए। ४—बिस्तर पर ही पूर्ण विश्राम अति आवश्यक है। ५—मुँह को कुल्ले कराकर नित्य स्वच्छ रखना चाहिए। ६—अगर दो-तीन दिनतक दस्त न हों तो गिलसरीन भी लगानी चाहिए। ७—ताप के अधिक होने पर नमक के पानी की पट्टी या यू डी कोलन के पानी की पट्ठी माथे पर रखनी चाहिए।

* हैजा (कालरा) *

संक्रामक व्याधि है जो महामारी के रूप में फैलती है यदि तुरन्त न ध्यान दिया जाय तो यह भयंकर स्वरूप धारण कर लेती है।

* कारण *

अधिक परिमाण में पानी पीने; कुसमय भोजन करने, अधिक मात्रा में भोजन करने, कुपथ; दूषित एवं प्रकृति से विपरीत भोजन करने, शौच के वेग को रोकने, भारी भोजन अधिक मात्रा में करने एवं जो आहार तथा जल दूषित हो गया है उसका सेवन करने से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

मल तथा वमन पदार्थ में कीटाणु रहते हैं, घी मक्खियों द्वारा रोग फैलाते हैं।

जिन लोगों की पाचन-क्रिया ठीक न हो वे यदि अहितकारी आहार सेवन करें तो अजीर्ण रोग पैदा होता है तथा उसमें भी कुपथ्य होने पर हैजा रोग उत्पन्न होकर फैलता है।

।। लक्षण ।।

इस रोग में वायु प्रकुपित होता है, शरीर में सुई चुभने जैसी पीड़ा हो जाती है। इस रोगमें सर्वप्रथम

पेट में दर्द या बार, बार दस्त लगना प्रारम्भ होता है फिर उल्टी भी शुरू हो जाती है, प्यास अधिक लगती है; गला सूखने लगता है, सिर में चक्कर आतेहैं और पेट तथा शरीर में ऐंठन होती है। जम्हाईयां आने लगती हैं। जलन होना और शरीर का रंग बदल जाना, कपकपी होना, सिर और हृदय में दर्द होना इस रोग के विशेष लक्षण होते हैं। इसमें कई बार पेशाब भी बन्द हो जाता है।

॥ भयानक लक्षण ॥

रोग बढ़ जाने पर शरीर ठंडा हो जाता है, दांत ओंठ, नाखून काले पड़ जाते हैं, चेतना शक्ति कम हो जाती है, वमन और दस्तर निन्तर होते हैं। आंखों की पुतलियां बढ़ जातीहैं, आवाज कमजोर पड़ जाती है और हड्डियों की संधियां शिथिल हो जाती हैं। बेहोशी भयानक अवस्था का द्योतक है।

॥ सावधानी ॥

१—रोगी को एकान्त में रखना चाहिए।

२—दस्त व उल्टी पर राख डाल देनी चाहिए।

३—पीने के पानी में पोटेशियम परमैंगनेट डाल

देना चाहिए ।

४—शाक, भाजी; फल आदि उबाल कर खाने चाहिए ।

५—बाजारू चीजें खाना बन्द कर देना चाहिए ।

॥ उपाय ॥

इस रोग में शीघ्र चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिये, आहार के साथ पोदीना की चटनी का विशेष प्रयोग करायें, अमृतधारा, सौंफ का अर्क, पोदीना का अर्क, अजमायन का अर्क औषधियां लाभकारी हैं । पेट दर्द के लिए सोंठ, सेंधा नमक, हींग और काली मिर्च पीसकर, पानी मिलाकर पेटपर लगायें । प्यास बढ़ जाने पर लोंग डालकर पानी उबालें और ठंडा करके दें, पेशाब रुकने पर असली की पुल्टिश लगाये और जवाखार पानी से दें, उल्टी होने पर संजीवनी बटी दिन में दो-दो गोली तीन बार दें ।

※ हैजा हरण ※

हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में हरे कै; दस्त के बाद ताजा प्याज का रस १-१ चम्मच देते रहने से रोग रोकनेमें काफी सहायता मिलतीहैं फिर भी यदि

बीमारी का वेग कम न हो तो ७ तोले प्याज के रस में १ रत्ती देशी कपूर मिलाकर ३-४ मात्रा बनालें और हैजा, कै-दस्त में दें तो शीघ्र लाभ होगा।

भिन्न-भिन्न जलवायु का प्रभाव प्याज सेवन की अवस्था में नहीं होता; फिर भी कफ, खाँसी, श्वास, क्षय, शोथ (सूजन), गल कंठ, कंठमाला, श्लीपद; गठिया रोग वालों प्याज से परहेज रखना चाहिये। वर्षा ऋतु में यह विशेष लाभप्रद नहीं होती, गर्भिणी को इसका सेवन सदैव हानिकारक होगा। धर्माचार्यों ने इसे तामस वृत्तिकर माना है और इसके सर्वथा का निषेध करते हुए लिखा है—

लहसनं गृञ्जनञ्चैव, पलाण्ड; पिंडमूलक।
करम्मया निचान्यानि हीना निरस वर्णन॥

अर्थात्—लहसन; प्याज, मूली, करम्म और इन के सिवाय जो नीच वस्तु हैं वह सब वर्जित हैं।

※ लू लगना ※

उष्णप्रदेशों में ग्रीष्मकाल के सूर्य की प्रचंड गर्मी के प्रभावसे या अग्नि आदि तीव्र तापसे उत्पन्न होता है। कई बार धूप से तृप्त टिन आदि के स्थानों में परिश्रम के कार्य से भी यह रोग हो जाता है। जो

व्यक्ति ज्वर ग्रस्त हो, थका हुआ हो और दुर्बलता एवं कब्जियत की अवस्थामें हो उसे सकाप्रकोप शीघ्र हो सकता है। सिर खुला रहने से सूर्य की गर्मी का प्रभाव मस्तक पर शीघ्र होता है। तदन्तर समस्त शरीर पर उसका प्रभाव होता है।

※ लक्षण ※

उष्णता के प्रभाव से व्यक्ति अकस्मात् मूर्छित हो आता है। इस रोग की तीन अवस्थायें देखने में आती हैं—

१—शरीर ठण्डा हो जाता है और चमड़ी चिपचिपी-सी मालूम होती है; नाड़ी दुर्बल हो जाती है और कुछ समय में रोगी होश में आ जाता है। इस अवस्था में कभी कभी हृदय का कार्य भी बन्द हो जाता है।

२—जब मूर्छा आती है तभी एक सौ डिग्री के लगभग बुखार हो जाता है। थोड़ी देर में मूर्छा तो दूर हो जाती है लेकिन चमड़ी सूखी दिखाई देती हैं। नाड़ी तीव्र होती है और श्वांस भी धीरे आता है। इसमें यदि ज्वर बढ़ता ही जाये तो रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

३—इस अवस्था में मूर्छित होते ही ताप अधिक हो जाता है। श्वांस रुक-रुककर आने लगता है। शरीर नीला पड़ जाता है और यह भयानक अवस्था कुछ घण्टे में ही रोगी का अन्त कर देती है।

॥ चिकित्सा ॥

रोगी को ठन्डे और हवादार स्थान पर रखें। सिर पर ठण्डा पानी या बरफ रखें। तुरन्त किसी चिकित्सक को दिखाना चाहिये। बुखार को कम करने वाली औषधि और मूर्छा दूर करने वाले उपाय; जो ठन्डे हों तत्काल कर सकते हैं।

कच्चे आम को अग्नि में गर्म करके या पानी में उबाल कर उसका रस, पानी तथा नमक मिलाकर सौंप, काली मिर्च एवं भुने हुए जीरे को मिश्रित कर या मिश्री मिलाकर सेवन करने से यह रोग पैदा होने का भय नहीं रहता। यह रोग की अवस्था में भी लाभ होता है।

॥ अल्पपित्त ॥

रोग उदर से सम्बन्ध रखता है, यह कोई भयानक रोग नहीं है फिर भी इसके परिणाम भयानक अवश्य सिद्ध होते हैं; जिनसे अनेक उपद्रवों से युक्त होकर

आदमी सदैव के लिए रोगी बन जाता है। यह रोग अपाच्य पित्ताशय से पैदा होने वाला है।

॥ कारण ॥

जो व्यक्ति हमेशा परस्पर विरोधी (जैसे दूध व मछली का एक साथ सेवन) आहार करते हैं और दूषित आहार, खट्ठे पदार्थों का अधिक सेवन करते हैं, आमाशय में दाह पैदा करने वाले, पित्त प्रकुपित करने वाले आहार का सेवन करते हैं, उन्हें प्रायः यह रोग हो जाया करता है। जो लोग धूमपान अधिक करते हैं उन्हें भी यह रोग हो जाता है।

॥ लक्षण ॥

इस रोग में भोजन ठीक प्रकार से नहीं पचता है। अनायास ही थकावट मालूम होती रहती है। डकारें खट्टी और कड़वी आती हैं, उबकाइयां आती रहती हैं, शरीर में भारीपन रहता है। गले में छाती में जलन रहती है, खाने की इच्छा भी नहीं होतीहै। कौढ़ी के भागमें दर्द रहता है। भोजन के १-२ घंटे बाद इसके लक्षण विशेष रूप से स्पष्ट हो जाते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है तब मुंह से खट्टा पानी आना या उल्टी होना प्रारम्भ हो जाता है। जिसमें

हरे पीले रंग का द्रव पदार्थ निकलता है। कई बार नीला एवं लाल रंग का चिकना पदार्थ भी मुँह के द्वारा बाहर निकलता है। कई बार कड़ुवा पदार्थ भी इस रोग की उग्रावस्था में सिरमें दर्द भी बना रहता है। जी मिचलाना, ठन्डे पदार्थ खाने की इच्छा, चक्कर आना और बेचैनी-सी भी इस रोग में प्रायः रहती है।

* उपद्रव *

जब यह रोग बढ़ता जाता है तो आमाशय में; पित्ताशय में शोध या व्रण भी होने की सम्भावना रहती है।

* पथ्य *

इस रोग में भोजन की ओर विशेष ध्यान दें। गरम खट्टे, चटपटे, मिर्च वाले पदार्थ सेवन न करने चाहिए। दूध, मलाई, घी, गन्ना हितकारी रहेगा। हरेधनिये का सेवन अधिक करना चाहिए। नारियल का पानी, फलों में मौसम्बी, अंगूर हितकर है। शागों में मूली; परवल; घीया; तोरई आदि हल्के ही शाक लाभदायक हैं।

* पुराना बुखार *

१— चने की भुसी एक तोला रात को एक कोरे मिट्टी के सकोरे में भिगोकर ओस में रख दी जावे, सुबह उसका पानी नितारकर ४० रोज पीना चाहिए तपेदिक (पुराने बुखार) की यह शर्तिया दवा है।

२—पीपल १ अदद, अजवायन १३ माशे—दोनों रात को पानीमें भिगोवें, सुबह को अजवायन निकाल डालें और पीपल को पानी में पीसें और एक ठीकरी खूब गर्म करके उसको पीपल के पानीमें बुझायें उसके पीने से हर तरह का बुखार चला जाता है।

३—तिजारी का बुखार—जिसदिन दौरा हो दौरा से पहले पीपल की शाखा से दांतोन करना शुरू करें, ईश्वर ने चाहा तो बुखार न आयेगा।

४—पारी का बुखार लाल मिर्चको रगड़कर सब नाखूनों पर लेप करवें, तिजारी हो या चौथिया पारी दूर हो जायेगा।

५—दस पैसे का कपूर एक बोतल में डालकर उसमें पानी भरवे; भरने के दो घन्टे बाद रोगी को थोड़ा पिलावे बुखार चला जावेगा।

७—जाड़ा बुखार केलिए फिटकरी १ तो.; मिश्री

१ तोला दोनों को बारीक पीसकर आधे से १ माशे तक आयु के अनुसार दें; जल्दी बुखार आना दूर होगा, अगर खाँसी हो तो नहीं देना चाहिये।

॥ बाल तोड़ ॥

१—दस-पन्द्रह दाने गेहूँ के मुँह में खूब बारीक चबाकर लगावे, बहुत जल्दी आराम होगा।

२—पान को आग पर गरम करके दो-तीन बार बाँधने से जल्दी बाल-तोड़ जाता रहेगा।

३—खाने का चना जो पानी में भीगा हो, उसमें गेरु घिसकर और गर्म करके बाल-तोड़ की जगह पर लगा दिया जावे तो २—३ घण्टे के अन्दर या तो बबालतोड़ फूट जावेगा या बैठ जायेगा।

॥ अरकुल निशा (रोगन बांउ)

टाँग में बहुत दर्द होता हो जिससे बड़ा कष्ट होता हो—

१—एलुआ १तोला, सूरनजान १तोला दोनों को कूट-छानकर चने के बराबर गोलियाँ बनालो और दोनों समय एक-२ गोली खिलाते जावें। सात गोली खाने पर दर्द दूर होगा। अर्क गाँजवाँ आधा सेर, सनाय, दहद और पानी आधा सेर—सबको मिलाकर

पकावे, जब सेर भर रह जावे तो उस पानी से गोली बनानी चाहिये।

॥ जोड़ों का दर्द ॥

१—दर्द के वास्ते राई का लेप करें, बहुत लाभ दायक है।

२—अजवायन पानीमें उबालकर भपारा दे,किसी तरह का दर्द हो आराम होता है।

३—अरन्डी केबीज छीलकर पहले दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाने खिलावें; इसी तरह एक-एक दाना बढ़ाकर ७ दाने तक पहुँच जावे, फिर १-१ दाना कम करके १ दाने पर आ जायें; गठिया दूर होगी।

४—मालकांगनी का पहले दिन एक दाना, दूसरे दिन २ दाने खिलावें। इसीतरह १–१ दाना बढ़ाकर सौ दाने तक पहुँच जावे फिर १-१ दाना कम करके १ दाने पर आ जांय, भूख बहुत ज्यादा बन जावेगी। अगर गर्मी ज्यादा मालूम हो तो आराम कम करना आरम्भ करदें।

५—कनेर की पत्तियां उबालकर कूटकर उसमें मीठा तेल मिलाकर लेप करें, गठिया के दर्दके लिए बहुत फायदेमन्द है।

६-शरीर में किसी किस्म का किसी जगह दर्द हो लहसन बारीक पीसकर लगाने से फौरन फायदा होता है। यह दवा परीक्षित है, ज्यादा देर लगाने से चकत्ते पड़ जावेंगे।

* जखम (घाव) *

१-घाव पर रोज पेसाब करने से बहुत जल्द सूख जाता है।

२-सिरस की छाल बारीक पीस कर घाव पर बुरकने से घाव बहुत जल्द ठीक होता है।

३- गुड़ घाव पर बाँधे सब खराब मवाद निकल कर जखम साफ होकर सूख जायेगा।

४-घोड़े की लीदमें आदमी का पेशाब मिलाकर लगाओ, लगाते ही खून बन्द होगा और बाद में घाव भरना शुरु होगा।

५- घास पीसकर या पत्थर बारीक पीस-छान कर लगाओ, बाल पीसकर या सफेद जाला मकड़ी का लगाओ फौरन खून बन्द हो जायेगा।

६-फिटकरी पीसकर बुरकने से फौरन खून बन्द होता है।

७-पुराना (कम्बल) का टुकड़ा और काले सांप

की कांचली दोनों जलाकर घाव में भर देने से २-३ दिन में तलवार का घाव भर जावेगा।

८-तीर और तलवार के घाव को पहले दो मर्तबा पहले शराब से धोलें उसके बाद एक अण्डा सफेद मुर्गी का ले; उसकी जर्दी निकाल डालें और सतेदी लेकर उसको शराब में मिलाकर फाया भिगोकर घाव पर रखें तो थोड़ ही दिन में आराम होगा।

९-हल्दी जलाकर उसकी राख कड़वे तेल में मिलाकर किसी तरह के घाव पर लगावें घाव का मुँह खुल जायेगा और आपरेशन (चीर-काड़) की जरुरत न होगी।

१०-जहरदार हथियार का जख्म होतो तम्बाकू और प्याज बराबर लेकर तिली के तेल में (जिसमें दोनों चीजें डूब जांय) हिलाले जब जावें निकालकर साफ करलें और थोड़ा सा मोम मिलाकर लगाया करें, अजमाई हुई यह दवा है।

॥ नासूर ॥

हर एक जख्म जो चालीस दिन तक अच्छा न हो उसमें से पीप वगैरह जारी रहे उनके लिए-

१-हुक्के की नली में जो मैल होता है उसमें रुई

तर करके घाव पर रखें तो नासूर और घाव जल्दी भर जायेगा।

२—सांप की कांचली जलाकर और उसमें बरगद का दूध मिलावें फिर उनमें रुई भिगोकर नासूर पर रखदे, १० दिन बाद उस पर से रुई उठालें। नासूर भरकर घाव अच्छा होगा, यह अजमाई दवा है।

३—अरंड कोपल पानीमें पीसकर नासूर पर लगा दें, जल्द आराम होगा इसमें सन्देह नहीं।

४—अरंड के पत्तों का रस निकाल कर उसमें एक तोला अच्छा सिंदूर लेकर खरल करें; जब सब रस सिंदूर में मिल जावे तो एक बत्ती को उसमें भिगोकर रात को नासूर में रखदें। सुबह बहुत से बारीक-२ कीड़े लगे हुए नजर आयेंगे इस तरह ३-४ बार ही रखने से आराम हो जायेगा।

॥ दुम्बल (बड़े फोड़े) ॥

१—सिरस के पत्ते गर्म करके बांधे तो सूजन में उस समय आराम होगा।

२—कबूतर की बीट और जौ का आटा पानी में पीसकर उसमें सिरका और शहद मिलाकर लेप करने से साफ हो जाता है।

३-पीपल की छाल पीसकर गुनगुना गर्म करके घाव पर लगाना चाहिए, इससे घाव पककर फूट जायेगा।

४-बेर के पत्ते, मूंग की दाल और कबूतर की बीट पीसकर गुनगुना गर्म करके लगावे; एकाएक घाव फूट जायेगा।

॥ आग से जलना ॥

१-जहाँ वह जला हो उस जगह को आगसे खूब सेककर; पुरानी रुई गर्म करके बाँध दो तो न जलन होगी न दाग पड़ेगा।

२-जली हुई जगह पर आलू का रस निकालकर लगाने से उसी समय दर्द सही होता है।

३-इमली की छाल जलाकर और गाय के घी में मिलाकर लगाने से जलन में उसी समय ठंडक पड़ जाती है।

४-बड़ की कोपल लें, गाय के दही में पीसकर लेप करें उसी समय आराम होगा।

५- बारूद से अगर कोई जल गया हो तो राल बारीक पीसके मीठे तेल में गर्म करके और मिलाकर फिर उसको सात दफा पानी में धोकर लगावें तुरन्त

ठण्डक पड़ जावेगी और अगर खाल भी जलकर गिर पड़ी हो आराम हो जायेगा।

६—पानी के घड़ों पर काई जम जाती है उसको छुड़ाकर लगाने से बहुत जल्द ठण्डक पड़ जाती है और दाग (छाला) नहीं पड़ता।

❋ चोट लगने का इलाज ❋

१—नमक ६ माशा, खाँड़ ६ माशा मिला कर खायें इससे चोट, दर्द में फौरन आराम होगा।

२—गेहूँ भुनकर उसके बराबर गुड़ मिलावे फिर खूब पीसकर थोड़ा गाय का घी मिलाकर डेढ़-२ तोले की गोलियां बनावें, एक—एक गोली सुबह—शाम को खायें, ३ दिन में चोट, दर्द को आराम हो जायेगा।

३—अगर हड्डी उतर गई हो तो चार पैसे भर हरी भंग की दो पोटली मीठे तेल में डालकर गर्म-२ सेकें बहुत जल्द आराम होगा।

४—तिल को कूटकर गर्म पानीमें डालें, खूब घुल जाय तब बारीक कपड़े पर लगाकर चोट की जगह रखें, मोट—चोट दोनों को फायदा होता है।

५—घी ग्वार पाठे का पत्ता चीरकर और उसमें हल्दी बारीक पीसकर गर्म करके लगादें उसके बांधने

से चोट दर्द और सूजन दूर हो जाती है; यह परि-क्षित दवा है ।

५—चोट लगने पर या बादी के दर्द में प्याज का अर्क गर्म करके १५-२० मिनट तक मले फौरन ही आराम होगा ।

६—मेंहदी की सूखी पत्ती ५ माशा बारीक पीसी हुई, तिली का तेल २ तोले में पकाकर लेप करने से उसको कंडे की आग से सेकने से मोच और चोट के दर्द में आराम होता है ।

७—गर्म पानी की धार डालने या मिट्टी जिसमें कंकर न हो आग में खूब गर्म करके और लस पर पानी डालकर सेकने से मोच में आराम होता है ।

॥ मोटापा दूर करने के उपाय ॥

१—कसरत (व्यायाम) करने से या दिल किसी चिन्ता में लग जाने से मोटापा कम होता है ।

२—मसूर के आटे की रोटियां पकाकर सिरके के साथ खिलाये, ८—१० में मोटा आदमी पतला हो जाता है ।

॥ दुबलापन ॥

१—खशखश के दाने शक्कर में मिलाकर माखन

के साथ खाने से बहुत मोटापा पैदा करता है।

२—दूध और घी ज्यादा खाने से बदन मोटा होता है।

३—उड़द की खीर खाने से दुबला आदमी मोटा हो जाता है।

४—साबुन को हाथ पैरों पर मलकर सुखाना बहुत लाभकारी है।

॥ सिर में जूँ का पैदा होना ॥

१—बकायन का फल पानी में पीसकर सिर में लगावें जूँ तुरन्त मर जायेंगे।

२—मिट्टी का तेल सिर में लगाने से जूँ मर जाते हैं।

॥ काँटा लगाना ॥

१—चावल पकाकर दही में मिलाकर लगाने से दागों में शीघ्र आराम होगा।

२—जूते से जो घाव हो जाय तो चमड़ा जलाकर लगाना बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

३—रास्ते में जूते काटने से जो जलन हो तो वहाँ आक का पत्ता रख लें तुरन्त जलन दूर होगी।

४—काँटा निकालकर उस जगह को दबाकर खून

निकाल दें और दांतों का मैल उस जगह लगा दें, आराम होगा।

५—अगर कांटा न निकल सकेतो उसपर तम्बाकू और गुड़ मिलाकर बांधे इससे कांटा निकल आता है या ऊपर की तरफ खिच आता है फिर उसे सुई वगैरा से निकाल देना चाहिये।

६—नमक १ माशा, तिली का तेल ३माशा दोनों को तेल में पीसकर रुई तर करके जिस जगह कांटा लगा हो उस पर बांधे कांटा निकल जायेगा, मगर जहाँ कांटा लगा हो पहले उस जगह को सुई से कुरेद कर यह फाया बांधा जाये।

७—जहाँ कांटा लगाहो वहाँ आक का दूध लगाने से कांटा ऊपर आ जाता है।

॥ लू का लगना ॥

१—प्याज की एक गांठ जेब में रखने से लू का असर बिलकुल नहीं होता है।

२—चने के सूखे पत्ते पानी से भिगो और मलकर उस पानी के खूब जोर से बदन पर छींटे मारें और उसी की बदन पर मालिश करे; कैसी ही लू लगी

हो बिलकुल दूर हो जायेगी। बहुत मर्तबा अजमाया हुआ नुस्खा है।

३—कच्चे आम को भूनकर और उसमें बूरे को मिलाकर शर्बत बनावे, उसके पीने से लू का असर दूर हो जाता है।

॥ गिलटियों की दवा ॥

बीमारी के दिनों में गिलटियाँ जांघ या गरदन में उठा करती हैं और उससे बुखार बहुत ही ज़ोर से आता है।

१—नीमके पत्ते और कालीमिर्च पीसके खिलाना चाहिये, ताऊन के लिए यह हुक्मी दवा है और नीम के पानी से नहाया करें।

२—सिरके में उम्दा नरबंशी (छदबार) पीसकर गिल्टी पर लगाने आराम होता है।

३—अपने पेशाब (मूत्र) को एक बर्तन में रखकर और उसमें कपड़ा भिगोकर गांठ पर बांधे, गांठ को आराम होगा।

४—नीला थोथा अपने ही मूत्र में घिसकर गिल्टी पर लगाने से गिल्टी को बिठा देता है और आराम हो जाता है।

६–बारहसिंगे के सींग को घिसकर और गर्मकर उसका लेप करे, गिल्टी को बैठा देगा ।

॥ पुरुषों के रोग नाभि का हट जाना ॥

१–नमछिकना बूटीसे दू ा गुड़ मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाले, एक-दो गोली पानी के साथ खाने से नाभि अपनी जगह आ जावेगी और कभी नहीं हटेगी ।

२–दो तोला सौंप लेकर गुड़ के साथ मिलाकर खाने से ३ दिन में ही नाभि का हटना जाता रहेगा।

॥ पथरी और दर्द का होना ॥

इस रोग में पेशाब बूँद-२ होकर बहुत जलन के साथ होता है, कभी पेशाब में खून भी आता है और कमर में बहुत दर्द होता है–

१–अरंड के बीज छीलकर उनको इस कदर भुने कि वह सुर्ख हो जाये और एक बीज सुबह–शाम को थोड़े दूध के साथ लें, १५ दिन में गुर्दे दर्द से हमेशा आराम होगा; रंग और कंकरी आयन्दा के लिए पैदा न होगी यह दवा परीक्षित है ।

२–सूरजमुखी के पत्तों का रस पीना इसके लिए बहुत लाभदायक है ।

३—एक रीठे का छिलका और उसकी गोली, जिसकी स्याही और गीजकी जर्दी दूर की गई हो। दोनों को खूब बारीक पीसकर पानी में पाँच गोली रोजाना पानी के साथ खावें, आराम होगा।

४—एलुआ १ माशे; गुड़ ६ माशे दोनों चीजें मिलाकर खिलावें।

॥ बहुमूत्र—अधिक पेशाब का आना ॥

इस रोग में पानी पीने के बाद तुरन्त पेशाब हो जाता है और हर समय प्यास मालूम होती है।—

१—इसी रोग में बढ़ की छाल का काढ़ा इसके लिए बहुत फायदेमन्द है।

२—लहसोड़े की कोंपल एक तोला लेकर उसका रस निकालकर १ तोला बूरा मिलाकर पीयें, अधिक पेशाब आने के लिए बहुत ही मुफीद चीज है।

३—बिनौला तीन तोला लेकर एक सेर पानी में उबालें जब तीसरा हिस्सा रहजाय साफ करके मिश्री २ तोला मिलाकर पीयें, निहायत लाभप्रद चीजहै।

४—तिलों की गजक या काले तिल एक तोला गुड़ से खायें इस रोग में फायदा करता है।

॥ बिछौना पर पेशाब कर देना ॥

१—थोड़ी कबूतर की बीट आटे में गूँथकर और रोटी पकाकर खावें तो सोते में पेशाब करनेकी आदत खत्म हो जायेगी, यह दवा परीक्षित है।

॥ पेशाब का बन्द होना या न होना ॥

१—भैंस के कान का मैल पेडू पर मलने से तुरन्त पेशाब खुलता है।

२—शोरा कलमी पीसकर नाभि पर रखें और ऊपर से ४-६ बूँद पानी की डालें, तुरन्त पेशाब खुल जावेगा।

३—चमेली के तेल को लिंग के सुराख में रखें, एक घड़ी में पेशाब खुल जायेगा।

४—बकरी के दूध को जो गुनगुना हो लिंग के सुराख में डालने से तुरन्त बन्द पेशाब खुल जायेगा; इसमें सन्देह नहीं।

५—गुनगुने पानी को किसी बर्तन में भरकर उस में पन्द्रह-बीस मिनट तक लिंग को डालकर रखने से पेशाब खुल जाता है।

६—रांग की डली नाभि में रखकर एक बूँद डालें थोड़ी देर में पेशाब खुल जायेगा।

।। कमजोरी की दवायें ।।

१–स्त्री प्रसंग के बाद एक तोला गुड़ खाने से ताकत कम नहीं होती, लिंगमें पूर्ववत् तेजी रहतीहै।

२–आक का दूध और तेल बराबर मिलाकर चार पसर खूब घोंटे और चने के बराबर लिंग पर लगावें, तमाम खराबियां दूर हो जावेगी।

३–चिरचिरे के बीज १४ माशे रोजाना कूटकर खावें निहायत पौष्टिक ताकतवर हैं।

४–जईंगन के बीज अपने पेशाब में पीसकर लिंग पर लेप करे, तेजी के वास्ते अजीब असरदार है।

५–हींग को पानी या शहद में घिसकर लेप करे बहुत ताकत देता है। हींग एक रत्ती रोज खाना भी मुफीद हैं।

६–सफेद प्याजका पावभर रस, आधा सेर शहद में डालकर रखले और हर रोज ४-५ तोला अपने मिजाज के अनुसार खावे, ७ दिन में ही पूरी ताकत आजावेगी मगर कुछ दिन और भी दवा जारी रखें जब तक कि वह खत्म न हो जाय फिर महीनेमें एक दिन उरद की दाल पकाकर खा लिया करें फिर कभी कमजोरी की शिकायत न होगी।

।। प्रमेह की हुक्मी दवा ।।

इसमें पेशाब से पहिले और बाद में धातु निकलती है; इससे आदमी का रंग पीला हो जाताहै और वह कमजोर रहता है।

१—बबूल की फली, छाल-गोंद इन सबको बराबर लेकर मिश्री मिलाकर पीसकर ५ तोला खाना चाहिये, सबसे अच्छी दवा है।

२—घुघची के पत्ते १ तोला, काली मिर्च ७ दाने और शक्कर सूखी २ तोला पीसकर ७ दिन तक खावे, अगर धातु पानी की तरह भी बहती होगी तो भी ठीक हो जायेगी।

३—बड़ का फल पीसकर दो तोला खावें या कोपल ६ माशे रोजाना खावे; धातु गाढ़ा करने में ताकत की यह शर्तिया दवा है।

४—सिरस के बीज और मिश्री बराबर मिलाकर ६ माशे उसको लेकर पावभर दूध के साथ खावें। धातु गाढ़ा करने के लिए अतिउत्तम दवा है।

५—रजस्वला स्त्री के साथ प्रसंग करने से जो कोई बीमार हुआ हो तो रेवत-चीनी को बारीक पीसकर ६ माशे सुबह के वक्त गाय के दूध के साथ

सेवन करे, तीन दिन में पूरा आराम होगा।

६—बढ़ का दूध एक बताशे में भरकर खाने से और हर रोज बताशा बढ़ाता जावे, सात दिन में पतली धातु इससे गाढ़ी हो जाती है।

७—ढाक के फूल १ तोला; चीनी ६ माशा ठण्डे पानी में पीसकर पीयें, लरियान को आराम होगा।

॥ फोता बढ़ जाना ॥

१—पाखाने से फारिग होकर खड़े होकर पेशाब करना इसके लिए बहुत उत्तम इलाज है।

२—तम्बाकू के पत्ते पर थोड़ा-सा तेल लगाकर और आग पर गर्म करके बांधे इससे फोतों की सूजन एक दम दूर होती है।

३—अरहर पानी में पीसकर लगाने से बच्चों के फोते बढ़ने से रोकती है।

४—ढाक के फूल पानी में औटाकर बांधना फोतों के सूजन के लिए निहायत फायदेमन्द है।

५—नौसादर १ तोला बारीक पीसकर सवा सेर पानीमें औटायें, जब १ सेर पानी रह जाय आग पर से उतारलें और जब पानी सहने लायक गर्म रहे तो १ लकड़ी में कपड़े का पुंछरा बांधकर उस पानी को

धीरे-धीरे फोतों पर मारे। पानी खत्म होने से पहले सूजन और दर्द कम हो जायेगा फिर लंगोटा बांध ले ताकि फिर न हो जाये।

६-धतूरे के पत्ते गर्म करके फोतों पर बांधने से फोतों की सूजन उतर जाती है, दर्द नहीं रहता है।

७-इसके लिए लंगोटा हमेशा बांधना बहुत ही अच्छा है।

॥ सोजाक ॥

इसमें पेशाब की नली के भीतर घाव हो जाता है और पेशाब में जलन के साथ कड़क पैदा होती है पहिले खून और फिर पीप आने लगता है।

१- सोजाक होनेपर अगर पहिले तीन दिन कुछ न खायें आराम हो जायगा; इसमें संदेह नहीं है।

२-तरबूज में लिंग को रखकर पेशाब करने से सोजाक जड़ से जाती रहती है।

३-एक बर्तन में शोरा डालकर पानी भरें, उसमें लिंग डालकर पेशाव करें तो पेशाब की सख्त जलन को बहुत आराम होता है।

४-सेर भर मेंहदी के पत्तों के रस में ६ माशे कत्था मिलाकर उसकी पिचकारी दिन में ६-७ बार

ले। अगर इसमें २ रत्ती नीला थोथा भूनकर और मिलादें तो ज्यादा लाभ होगा, इसमें संदेह नहीं है।

५–बबूल की लकड़ी का घुन पीस-छानकर एक हथेली पर करलें इसमें मिश्री मिलाकर बकरी के दूध की लस्सी के साथ खावें, ३ दिन में और ज्यादा से ज्यादा ७ दिन में आराम हो जायगा। बबूल की लकड़ी का घुन न मिले तो दूसरी लकड़ी को भी ले सकते हैं। मगर बबूल की लकड़ी ज्यादा अच्छी है।

६–ग्वार पाठे में कलमी शोरा मिलाकर आग पर खुश्क कर ३ माशे दूध की लस्सी में दें, ७ दिन में आराम होगा।

७–निधफुली आधे तोला पावभर पानी में पीसकर शहद १ तोला मिलाकर दोनों वक्त पीने से १ हफ्तेमें सुजाक जाता रहेगा। लाल मिर्च न खायें नहीं तो कष्ट बढ़ेगा।

॥ आतशक ॥

इसमें पेशाब के मुकाम पर फुन्सियां हो जाती हैं और तमाम बदन पर दाद जैसे चकत्ते पड़ जाते हैं और बहुत ही जलन होती है तथा मुँह में छाले हो जाते हैं।

१—इसके लिए आक की जड़ जलाकर कोयला करलो और उसके बराबर मिश्री व घी मिलाकर ५ से ७माशे तक रोजाना खाओ, जख्मों पर १०१ बार का धोया हुआ घी लगावें और सिर्फ बेसनी रोटी घी मिलाकर खाये तो आतशकर दूर हो जायेगा।

२—रीठे जिससे कपड़े धोये जातेहैं उनका छिलका उतारकर धूप में सुखाया जावे फिर बारीक पीसकर कपड़छन कर उसमें पानी मिलाकर मसूर के बराबर गोलियाँ बनाली जावे, प्रातःकाल एक गोली निगल जावें और उसका कुछ पानी मिलाकर पी जावें। खाने को दूध-घी दें, नमक-मिर्च बिलकुल न खावें। १२ रोज में आतसक में बिलकुल आराम होगा।

३—सत्यानाशी का रस १ तोला, घी आधे तोले, काली मिर्च ७ मिलाकर प्रातः पिलावे; बेसनी रोटी घी से खाने को दें ७ दिन में लाभ होवे।

४—नीम के हरे पत्ते तोलेभर लेकर प्रातःकाल भंग की तरह घोंट और पावभर पानी में मिलाकर छानले और २ तोले शहद और ६ माशे चोपचीनी पीसकर फाक ले, ऊपर से नीम का अर्क शहद मिला कर पीयें। ४० दिन में जड़ से आतिशक खत्म हो

जायेगी। खटाई और तेल की चीजें न खावे।

॥ स्त्रियों के रोग—बांझपन ॥

१—पीपल की दाढ़ी २० तोला बारीक पीसकर छानली जाय और उसके बराबर कच्ची शक्कर मिला कर जब स्त्री-नहान हो उसी दिन से २तोले स्त्री को और २ तोले मर्द को गाय के दूध में १० दिन तक स्त्री प्रसंग न करे, ११ वें दिन स्त्री प्रसंग करने से गर्भ जरूर रह जायेगा।

२—सहजना फरी १५ दिन तक केले में रखकर खिलाने से औरत को कामचेष्टा न होगी।

॥ मुश्किल से बच्चा पैदा होना ॥

१—काले सांप की काचली जलाकर उसकी राख गुलाब-जल्द में मिलाकर योनि के ऊपर के भाग पर लेप करें या आग पर रखकर धूनी देने से बच्चा तुरन्त पैदा होगा।

२—गधे के खुर की धूनी से बच्चा पैदा होने की तकलीफ में नजीब असर दिखाती है; यह अजमाई हुई चीज है।

३—कपास का दरख्त जो १ साल का पुराना हो उसका सूरज ग्रहण के वक्त जब कि ग्रहण पूरा

होकर कम होने लगे उखाड़कर रखलें; इस जड़ को घिसकर १ चमचा भर मिलाने से और थोड़ा-सा पानी गर्भवती के सिर पर डालने से तुरन्त बच्चा बाहर आ जायेगा।

४—बथुआ के बीज २ तोले औटाकर पिलाने से पेट से मरा हुआ बच्चा निकल पड़ेगा।

५—चिरचिटा की पत्ती का रस तलवों पर लेप करें, ज्यादा देर न रखें।

॥ मासिक धर्म का ज्यादा आना ॥

१—ज्वार के भुट्टे की राख को पान में रखकर खिलावें शर्तिया मासिक-धर्म बन्द होगा।

२—इसके लिए चौलाई की जड़ सबसे तेज हुक्मी दवा है।

३—असगंध कूट छानकर और उसमें सफेद शक्कर बराबर मिलाकर १ तोला ताजे पानी के साथ खाना बहुत लाभदायक है।

४—श्वेत चीनी ३ माशा रजस्वला होने से ३-४ दिन पहले खाना शुरु करदे, मासिक-धर्म ठीक आयेगा और सब खराबियां दूर हो जावेगी मगर जब मासिक धर्म हो उस वक्त वह दवा न खायें।

५—औरत के जो सफेद पानी आता हो तो चूहे की मैंगनी बारीक पीसकर और बराबर मिश्री मिला कर ३ माशे निहार मुँह दूध के साथ ३ रोज खाने से कैसा ही सफेद पानी कितने ही अर्से से आता हो शर्तिया बन्द होगा।

६—इमलीके बीज भूनकर उनका छिलका उतार कर और बारीक पीसकर, उसके बराबर शक्कर या मिश्री मिलाकर २ तोला निहार मुँह खाकर ऊपर से गाय का ताजा दूध पाव भर पीने से ३ हफ्ते में पानी बन्द हो जाता है।

॥ स्त्रियों के छाती रोग ॥

१—लहसन की जड़ की छाल पानी में पीसकर कई मरतबा लेप करे सुरखी सूजन दूर होगी।

२—अनार की छाल पानी में पीसकर १५ दिन तक लेप करते रहने से छातियां सख्त हो जाती है।

३—बरगद की दाढ़ी के लाल किनारे सुखाकर पानी में पीसकर लेप करने से छातियां सख्त होंगी।

४—सतावर को बहुत बारीक पीसकर खाने से दूध बहुत बढ़ जाता है।

।। स्त्रियों का प्रदर और प्रसूत रोग ।।

१–पीपल के पेड़ के पके फल बारीक पीसकर उसमें बराबर शक्कर मिलालें, दूध के साथ खाने से प्रदर और प्रसूत दोनों ही दूर हो जावेंगे। यह एक आजमाई दवा है।

।। सूजन ।।

१–जिन दिन भी किसी जगह पर फोड़ा निकले उस दिन चूना और शहद मिलाकर लगावें तो सूजन आगे नहीं चढ़ेगी और जो सूजन होगी तो वह खत्म हो जायेगी।

२–गोबर गर्म करके बांधो सूजन दूर होगी।

३–चौलाई का साग घी में मिलाकर सूजन पर लेप करना चाहिए। हर प्रकार की सूजन के लिए बहुत लाभदायक है।

४–चावल कूटकर उसे दही के पानी में पकाकर लगाना उम्दा दवा है।

।। कौवे का गिरना ।।

इससे कौवा मोटा हो जाता है और नीचे की तरफ लटक जाता है जो मुँह खुलवाने से ही मालूम देता है।

चूल्हे की मिट्टी और काली मिर्च पीसकर मिला देने से अँगूठे पर लगाकर काग को उठा दो, फिर न गिरेगा।

ज्यादा प्यास लगना—पीपल की छाल को जला कर और थोड़े पानी में कांसे के बर्तन में बुझा कर पानी पीने से प्यास दूर होगी, यह अजमाई दवा है।

॥ बच्चों को सूखा रोग का होना ॥

इस रोग में बच्चे को पहले दस्त आते हैं और इससे बच्चा बिलकुल सूख जाता है और हरारत भी रहती है।

१—अन्डे की जरदी निकालकर अपनी पथेली पर रखें और बच्चे के पाखाने का मुकाम उस जर्दी पर रखा जावे, सूखा रोग होगा तो जरदी अपने आप खिच कर बच्चे के पेट में चली जायेगी। यह पहचान है और यही दवा है, अजीब दवा है, ५-६ रोज तक ऐसा करें, बच्चे को आराम होगा।

२—बच्चों की मिर्गी में काली मिर्च ले २१ रोज तक दूध में भिगो दें, इसके बाद सुखाकर रख छोड़े, जिस वक्त बीमारी हो पानी में घिसकर या खुश्क हो

हुलास दें फौर फायदा होगा और बीमारी बिलकुल ठीक हो जायेगी।

३—मीठे नीम के पत्तों का रस निकाल तिल के तेल में मिलाकर मालिश करें।

४—बन तुलसी के पत्तों को पान में रख चबा व पीसकर तलवे तथा पीठ पर मलें।

॥ चेचक ॥

१—रुद्राक्ष जिनकी बनी माला पहनते हैं बारीक पीसकर बच्चे को पिलावे इससे चेचक नहीं निकलेगी और अगर निकलेगी तो बहुत कम। बड़ का पत्ता जिस पर दाना उभरा हो उस दाने को खिलाना उस की भी यही तदबीर है।

२—सात दाने सम्मुख(सेंमल) के बीज को पीसके पीना या साबित दाना निगल जाना यह हुक्मी पेस-बन्दी चेचक के मौसम के लिए है।

३—चेचक के मौसम में जो बच्चा दूध पीता हो उसके दूध पिलाने वाली को ४ तोला खौपड़ा ७ दिन तक बराबर खिलायें और २-३ वर्ष का हो तो उसे २ तोला और अगर तीस वर्ष का हो तो तीन तोला

खोपड़ा ७ दिन बराबर खिलावे चेचक नहीं निकलेगी अगर निकलेगी तो बहुत कम होगी।

४—बच्चा जिस समय पैदा हो उसको साफ कर मेंहदी पानीमें पीसकर उसको पैरोंके तलवे में लगाने से उम्र भर चेचक नहीं निकलेगी।

॥ साँप के काटने की दवा ॥

साँप के काटते ही जहाँ पर जहर चढ़ गया हो उससे ऊपर मजबूत डोरे या रस्सी का बन्द खूब कस कर बांध दें और तुरन्त नौसादर आँखों में बारीक पीसकर भरदें जिससे आँख खराब न हों क्यों कि पहले आँखों पर असर होता है और शीघ्र ही आधा सेर घी या कड़वा तेल पिला दें और घाव को तेज चाकू या उस्तरे से काटकर खराब खून निकाल दें। फौरन लाभ होगा।

॥ बिच्छू काटने की दवा ॥

१—गंधक और हरताग को मिलाकर धूनी दें। धूनी जहांतक पहुँचेगी बिच्छू का जहर न रहेगा, उसे जलाने से भी बिच्छू भागते हैं।

२—नमक पानी में घोलकर आंख में टपकायें तो तीन मर्तबा में पूरा आराम होगा।

३—बिच्छू मारकर जहाँ काटा हो वहाँ मलने से बहुत जल्दी आराम होगा।

४—लहसन, खटाई पीसकर डंक मारने की जगह पर मलें तुरन्त फायदा होगा।

५—इमली का बीज भिगोकर, उसके ऊपर से काला छिलका उतार डाला जाये और सफेद हिस्से को घिसकर काटने की जगह पर लगायें वह फौरन चिपट जायेगा और बिच्छू का सब जहर चूस लेगा। सब जहर निकल जाने पर खुद इमली का बीज घाव से छूट जायेगा; यह अजमाई दवा है।

६—जहाँ बिच्छू काटे उसजगह तुरन्त पेशाब कर दें जहर का असर न होगा।

७—आम का फूल जिसको आम का मौर या बौर कहते हैं जिस वक्त पहली बार नजर आवे उसको हाथों में खूब अच्छी तरह मललें, हाथ में यह ताकत सालभर रहेगी, जहाँ बिच्छू ने काटा हो ५-६ मिनट हाथ फेरने से जहर जाता रहेगा तथा जहाँ तक दर्द

हो वहाँ तक हाथ फेरते जावें जब तक कि काटी हुई जगह पर दर्द आ जाये।

८–चिरचिटा जिसको कुत्ता घास भी कहते हैं, उसकी जड़ अगर हाथ में है तो बिच्छू हाथ में लेने पर भी नहीं काटेगा।

९–मिट्टी का तेल मलने से भी जहर फौरन दूर हो जाता है।

१०–लाल मिर्च शहद में पीसकर लेपकर फौरन जहर में आराम होगा।

॥ पागल कुत्ता ॥

१–कुलले को चावल के बराबर कतर लें और एक चावल सुबह मुँह निहार ७ दिन तक निगलने से कुत्ते के काटे का फिर कोई डर न रहेगा और सब जहर जिस्म से दूर हो जायेगा।

१–एक माशा बाजरे का फूला कूटकर और गुड़ में मिलाकर सात दिन खिलावे तो फिर कोई डर नहीं रहेगा।

३–जहाँ पर पागल कुत्ते ने काट लिया हो वहाँ ४० दिन तक आक का दूध डालते रहें और ४० दिन

तक घाव बन्द होने दें फिर जहर का असर न रहेगा और पागल होने का डर जाता रहेगा।

४—कैथ के १० पत्ते और १० काली मिर्च रगड़ कर मिलावे और छानने से जो फोक रहे उसे घाव पर बांधे, जल्द आराम शुरू होगा। ४-५ रोज ऐसा करने से बिलकुल फायदा होगा।

५—रीठा का छिलका बारीक कूट और छानकर पानी में मिलाकर कुछ घाव पर लगा दें तो जल्दी आराम होगा।

नोट—यह दवा पागल गीदड़ और भेड़िया के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है।

॥ सिर में दर्द ॥

१—बिनौले की मिंगी पीसकर लेप करें जिससे फायदा होगा।

२—धतूरे के बीज थोड़े-थोड़े लेकर चबाये और थूकते रहें तो दस वर्ष का पुराना दर्द भी अच्छा हो जायेगा।

३—चावलों को ३ बार दूध में भिगो व सुखाकर बहुत बारीक पीसलें, उसमें से थोड़ा-सा सूंघें तो कैसा

हो पुराना दर्द हो—जाता रहेगा, आधा सीसी को भी इससे आराम हो जाता है। सिर का दर्द नजले व जुकाम से हो और नाक के कीड़े व बदबू भी दूर हो जाती है। दूसरी तरफ के नथुने में नसबार लेने से दाढ़ दर्द भी मिट जाता है।

॥ आधा सीसी ॥

१—एक छटांक बूरा लेकर गिलास में शर्बत बना कर सूर्य निकलने से पहले पिये, उसी वक्त दर्द जाता रहेगा। अगर पहले रोज न जावे तो थोड़े दिन और पीना चाहिये।

२—जमाल गोटे की मिगी घिसकर सिरमें लगाने से आधा सीसी को उसी वक्त आराम हो जाता है। अगर कहीं फुन्सियां निकलती हैं तो उन पर मक्खन छोटी इलायची मिलाकर लगायें।

॥ सन्निपात ॥

१—इससे बुखार; सिर में भारीपन और दर्द होता है, बीमार बहकी बातें करता हैं, उस अवस्था में कबूतर या मुर्गे का पेट चीरकर तुरन्त सिर पर गर्म-गर्म बांधे तो जल्दी लाभ होगा।

॥ नजला व जुकाम ॥

१—सूरज निकलने से पहले ठण्डे पानी से नहाने और सिर पर गर्म पानी डालने से जुकाम न होगा।

२—मुँह धोते समय सुबह अँगूठे से हलक को जहाँ सूराख है ५-६ मिनट तक आहिस्ता-२ मलो। नजला, आँखों की बीमारी और आँखों की रोशनी बढ़ाने के लिए निहायत उत्तम दवा है।

३—पानी को चार घड़ी धूप में व ४ घड़ी ओस में रखकर पियें, जादू-असर दवा है।

४—हल्दी का धुआँ नाक में पहुँचाने से जुकाम बन्द हो जायेगा और सिरस के बीज छाया में सुखा-कर बारीक पीसकर सूँघने से बन्द जुकाम जारी हो जाता है।

५—पीली सरसों का तेल रुईमें लगाकर नाक के दोनों नथनों से दिमाग में चढ़ावे। १५ दिन में कैसा ही पुराना नजला हो, जाता रहेगा।

६—अरहर, चना या बाजरा दर-दरा कूटकर और नमक मिलाकर पोटली बनावे और गर्म करके सेकने से आराम होगा।

॥ दांतों के रोग ॥

१—पाखाना फिरते वक्त मुँह बन्द करके, दांत से दांत दबाए बैठें, दर्द न होगा मुजर्रब है।

२—दांतों केलिए सरसों के तेल की कुल्ली करना निहायत लाभदायक है, जिससे हर तरह के रोगों से दांत बचे रहेंगे।

३—नीम की दांतौन हमेशा करने से दांतों में कीड़ा नहीं लगता।

४—सौंठ व कपूर पानी में पीसकर जिस दाढ़ में दर्द हो उसके दूसरी तरफ के कान में टपकाना दाढ़ के दर्द के लिए हुक्मी दवा है।

५—कपूर दांतके नीचे रखने से दांतों का पुराना दर्द दूर हो जावेगा, दांतों में अगर कीड़े का सुराख हो उसमें भर देने से सुराख भरेगा।

६—छोटी कटेरी का फूल तम्बाकू की तरह चिलम में पीसकर उसका धुआं मुँह में रखें तो कीड़े निकल जावेंगे और दर्द ठीक हो जायेगा।

७—आक के पत्ते का अर्क गुनगुना कान में टपकाना या आक की जड़ गर्म करके दांतों में दबाना फौरन दर्द को आराम करता है।

।। कान की बीमारियां ।।

[कान का दर्द और न सुनाई देना]

१—लहसन कूटके साफ रस कान में टपकावे तो सर्दी के दर्द में फौरन आराम होगा। कान में फुन्सी हो तो बिठा देगा या फोड़कर बहा देगा।

२—कान में जख्म हो तो बरगद का दूध टपकायें निहायत मुफीद है।

३—दर्द खुश्क हो तो आक के पीले पत्तों का रस डाले, जरूर फायदा होगा। १५ दिन तक कान में डालने से बहरेपन को आराम होगा।

४—ऊँट का पेशाब ४ हिस्सा; अदरक का रस १ हिस्सा मिलाकर चार बूंद कान में डाले, बहरेपन के लिए बहुत फायदेमन्द है।

।। आंखों की बीमारियां ।।

(निगाह की कमजोरी)

१—सबेरे बासी मुँह का थूक आंख में लगाना आंख की बीमारियों को दूर करने व निगाह की तेजी के लिए विचित्र गुण रखती है।

२—रात के समय प्याज के रसमें शहद मिलाकर

लगावें या प्याज का रस सलाई से लगायें या आँख में डालें तो ३ दिन में ही निगाह की कमजोरी को फायदा होगा।

३–हड़ का बीज घिसकर आँख में लगाना नजर की कमजोरी के बहुत लाभदायक है।

४–आँख में दर्द हो तो दूसरी तरफ के पांव के नाखून में दूध भरें, फौरन लाभ होगा।

५–एक गुल-मण्डी निकलने से साल भर तक आँख नहीं दुखेंगी।

॥ परवाल ॥

दोनों आंखों के षपोटों के अन्दर जाल-से निकल आते हैं जो पलक मारने और ऊपर देखने से आंखों में चुभते हैं।

१–पहले नोंचने से बाल उखाड़ फिर नौसादर की डेली जिसका सिरा पत्थर पर घिसकर साफ कर लिया हो उसको लगायें, इस तरह २-३ मर्तबा लगाने से बाल उगना बन्द हो जावेंगे।

२–बाल उखाड़ कर घोड़े के दुम की राख उस जगह लगावें, आराम होगा।

३–गेरू व फिटकरी का सुर्मा बनाकर लगावें।

॥ रतोंदी ॥

इस रोग में रात को दिखाई नहीं देता, दिन में दिखाई देता है।

१—संभोलूथा सिरस के पत्तों का रस निचोड़कर आंख में टपकायें फौरन रतोंदी जाती रहेगी।

२—सफेद शक्कर का बताशा लेकर खूब बारीक पीस लिया जावे और आंखों में अच्छी तरह भर लें, फौरन रतोंदी दूर होगी, अजीव दवा है।

३—सिरस के बीज आधा तोला बारीक पीसकर और आटे में मिलाकर रोटी पकायें और ३-४ रोज तक खावें; रतोंदी नहीं आवेगी।

॥ मोतियां बिन्द ॥

इसमें एक साथ आंखें अन्धी हो जाती हैं लेकिन आंखों की पुतलियां बिलकुल साफ रहती हैं।

१—इमली के पत्ते का रस छटांक भर कांसे के कटोरे में नीम की लकड़ी से (जिसमें तांबे का पैसा लगा हो) घोटें और फिर जिस स्त्री के लड़का हो उसके दूध में ४० बार खरल करके आंखों में लगावें जरूर फायदा होगा।

२--प्याज का रस और शहद मिलाकर आंखों में लगावे, बहुत लाभदायक है।

॥ दमा और फेफड़े के रोग ॥

इसमें खांसी के साथ कफ निकलता है और सांस जल्दी-जल्दी चलती है।

१--आक की कली २ हिस्सा, सांभर ६ हिस्सा, काली मिर्च ४ हिस्सा कूटकर चने के बराबर गोली बनावें। दमे की बहुत बढ़िया दवा है।

२--कच्ची रोटियों के बीच में १ पत्ता अरंड का रखकर पकायें और उसे निकालकर थोड़ा पान में रखकर खायें। यह दवा ताकतवर है और दमे को दूर करने में अजीब है। अगर गर्मी मालूम देती हो तो दूध-घी अधिक स्तेमाल करें।

३--गेहूँ, हल्दी बराबर लेकर दोनों को अलग-२ मिट्टी के बर्तन में जला लें, फिर दोनों को बारीक पीस मिलाकर पहले दिन ५ माशा गुनगुने पानी से लें; थोड़ा-२ रोजाना बढ़ाते जायें, ७ हफ्ते इस्तेमाल करने से बिलकुल आराम हो जायेगा।

४--मुलहठी को सौंफ के अर्क में पीस-छानकर

गुनगुने पानी के साथ पीने से तुरन्त सांस की खराबी दूर हो जाती है।

॥ खांसी ॥

१—बार-बार आइना देखें, खांसी दूर होगी।

२—नमक की डेली मुँह में डालकर चूसते रहें, मामूली खांसी ठीक हो जाती है।

३—पखाने के मेकाम पर तेल मलना खांसी के लिए मुफीद है।

४—पीपल को तम्बाकू की भांति चिलम में रखकर पीना पुरानी खांसी को फायदा होगा।

५—गेहूँ १ तोला लेकर पावभर पानी में उबालें, थोड़ा-सा सेंधा नमक डालें। जब एक तिहाई पानी रहे तब छानकर पीयें निहायत मुफीद है।

६—काली मिर्च १तोला, पीपल १ तोला, अनार ४ तोला; जवाखार ।। तोला, इनको ८ तोले गुड़ में चटनी की तरह मिलाकर झड़बेरी समान गोली बना कर चूसें; सख्त व असाध्य खांसी भी दूर हो जायेगी जिसमें खून आता हो और दमे के करीब पहुँच गई हो—आजमाई हुई दवा है।

७—तबे की स्याही थोड़ी-सी पान में डालकर खायें तो खांसी दूर हो जाती है।

८—हल्दी की गांठ मुँह में रखकर सोते रहें तो खांसी को बहुत फायदा होगा।

९—कमलगट्टा शहद के साथ मिलाकर चाटें।

॥ काली खांसी ॥

१—गावजुवां ६ माशा लेकर रात एक मिट्टी के बर्तन में आधा पाव पानी में भिगो दें, सुबह को किसी साफ लकड़ी से हिलाकर छानलें और २ तोला मिश्री मिलाकर पीलें, ४-५ रोज में काली खांसी दूर हो जावेगी। यह खुराक पूरे आदमी की है; बच्चों को कम दी जावे।

२—केले के पत्ते को मिट्टी कर फूंक लें, मात्रा १-२ रत्ती तक शहद से दिन में ३ बार चाटें।

॥ निमोनिया ॥

(फेफड़े का ज्वर)

१—बारहसिंगा का १ सींग लेकर उस पर शोरा कलमी; अजवायन, १ तोला अर्क अजवाइन में पीस-कर लेप करें; सींग को २ सेर कोयले की आग में रखे

जब आग ठंडी हो जाये तो निकालकर बारीक पीसलें उसको १ से २ रत्ती अर्क अजवायन ६ तोले के साथ खिलाये, निमोनिया के लिए यह दवा अक्सीर है।

॥ हैजा ॥

इसमें कै–दस्त आते हैं, कभी-२ केवल दस्त आते हैं कै नहीं होती और पेशाब बन्द हो जाता है।

१–जिस वक्त भारीपन मालूम हो उस वक्त ठंडा पानी पिलाये जिससे जहर शरीर से निकल जाता है और हैजा रुक जाता है, मगर कै–दस्त होने के बाद जरा भी पानी पिलाने से उसी समय मृत्यु होगी।

२–नीम की सींक की गांठों की ठंडाई पीने से हैजा दूर हो जाता है।

३–प्याज १, अदरक, कालीमिर्च ७ दाने, पोदीना ४ माशे नीम के डंड से कूड़ी में बारीक पीस आधा पाव पानी मिलाकर बिना छाने पिलादें। हैजे की असाध्य अवस्थामें भी सब शिकायतें दूर होकर रोगी को ऐसा मालूम होगा कि जलती हुई आग में पानी डाल दिया हो, यह विचित्र दवा है।

४–हैजे के दिनों में कपूर पास रखना लाभकारी और ककड़ी खाना बहुत हानिकारक है।

५—हैजा शुरू होते ही फौरन २-३ घड़े का ठण्डे पानी से नहलाने से असर कम होता है और फौरन आराम हो जाता है।

६—हुक्का का पानी १ तोले हर ३ घण्टे में दें।

॥ तिल्ली ॥

इसमें पेटके बाई तरफ सूजन और सख्ती मालूम होती और हाथ-पैर सूख जाते हैं।

१—खाली पेट मूली, सेंधा नमक प्रातःकाल खाने से आराम होगा।

२— सब्जी ४ माशे गुड़में मिला १२ दिन खायें, जबकि किसी दवा से आराम न हो।

३—नौसादर, चूना बराबर लेकर दोनोंको मिला कर रात को ओस में रखें सुबह तेल-सा हो जायेगा, उस तेल को शीशी में रखें, १ बूँद बतासे में डालकर रोज खाने से तिल्ली टुकड़े-२ होकर पाखाने के रास्ते से निकलती रहेगी।

४—झाऊ के सूखे पत्ते पीस ६ माशा शक्कर के साथ खाना शर्तिया इलाज है।

५—तिल्ली पर ओले बांधने से उसी दिन या ५ या ६ रोज में पूरा आराम होता है।

।। (संग्रहणी) पतले दस्त ।।

१—बरगद का दूध नाभी में भरें, हर किस्म की संग्रहणी को फायदा होगा।

२—आँवले को बारीक पीसकर नाभी के चारों तरफ दीवार-सी बनावे जिसके किनारे ऊँचे हो, फिर उसमें अदरक का रस भरदे। पानी की तरह जो भी दस्त जारी हो बन्द हो जावेंगे।

।। पेचिस ।।

इससे पेट में ऐंठन, दर्द होता है और बार-बार पखाने की जरूरत होती है लेनिक पखाना कम और खून व मवाद ज्यादा आता है।

१— ३ माशे काली हरड़ दरदरी कूटकर खिलावे ऊपर से १ तोला अण्डी का तेल पिलावे। निहायत उत्तम दवा है।

२—ईसबगोल १ तोला पानी में पकाकर, मिश्री मिलाकर खायें तो फौरन पेचिस दूर होगी।

३—आँव के साथ खून आता हो तो सोंठ, सोंफ, हरड़, मिश्री को बराबर ले बारीक पीसकर सुबह आधे तोले ठण्डे पानी के साथ इस्तेमाल करें, ३ दिन में फायदा होगा।

४—प्याज ५ माशे आधे पाव पानी में पकाकर छानकर और जायके के लिए थोड़ा-सा मीठा मिलाकर पिलावें, ३ दिन में पेचिस को आराम होगा।

५—चूने के ऊपर का नितरा पानी १ छटांक, उसमें १ तोला गर्म घी मिलाके पीने से लाभ होगा।

६—३ माशे राल पीस दही में मिलाकर २ दिन खाने से पेचिस जाती रहेगी, खाने में केवल चावल खायें।

७—छः माशे ईसबगोल पानी से फांककर लें। पेचिस के लिए निहायत मुफीद है।

॥ वायु गोला ॥

इसमें पेट के अन्दर एक वायु गोला-सा उठता हुआ मालूम होता है और दर्द होता है।

१—हींगका फाया नाभी पर लगावे, नमक-जीरा हींग भुनी पीसके फांके, फौरन फायदा होगा।

२—पीले हर्ड का छिलका, काला नमक, सनाय बराबर, कूट—छानकर गर्म पानी के साथ खाकर सो जाये, शर्तिया आराम होगा।

३—अण्डी का तेल ६ माशे सुबह को पीयें, त्ररत होकर वायु गोला कम हो जाता है।

॥ बबासीर का इलाज ॥

१—मठा (छाछ) में सेंधा नमक मिलाकर कुछ अर्सा स्तेमाल करनेसे बबासीर जड़से चली जाती है।

२—नारियल-जटा जलाकर राख करलें, बराबर सुर्ख शक्कर मिलाके १ तोला, पानी से सुबह खावें। मस्सों में ३-४ बार राख को घी से लगावें, २१ रोज में बबासीर और मस्से दूर हो जावेंगे।

३—एक सेर ककरौंध का रस लेकर पकावें, जब गाढ़ा हो जाये तो काली मिर्च से समान गोली बनायें सुबह-शाम खाने से हरेक बबासीर दूर होती है।

४—अरने उपले (जंगली कंडा) जलायें जब धूँआ निकलना बन्द हो जावे तब बर्तन के नीचे बन्द करें जिससे वह बुझ जावे (सफेद राख न हो बल्कि काली रहे) उसको पीस ३ माशे एक पहर के बाद दें, खून को २-३ खुराक में बन्द कर देगा।

॥ नहरवा नावा ॥

यह प्राय: पांव में और नाभी के बीच पैदा होता है, पहिले एक छोटी फुन्सी निकलती है और वह फिर छाले-सी हो जाती है, छाले से डोरा-सा निकलता है और जलन होती है।

१—आक की जड़ में औंटाकर दही जमाकर घी निकाले, उसको चावलों के साथ खायें तो उम्रभर न निकलेगा।

२—जंगली कबूतर की बीटमें बराबर गुड़ मिला फालसे के बराबर गोलियां बनाकर १५ रोज खायें, आयन्दा निकलने का डर न रहेगा।

३—घोंगे जो तालाब या दरिया में होते हैं, ६ माशे लेकर उसमें ६ माशे गुड़ मिलाकर दोनों को बारीक पीस लेवे और तीन गोलियां बनाई जावे। १ गोली रोज खावे तो तीन रोज में नरवा निकाल कर आराम हो जायेगा।

४—मोर का पंख बारीक कतरकर गुड़ में मिला बेर के बराबर गोलियां बनायें, एक गोली रोज खावे तीन रोज में आराम होगा।

५—आक के दूध में थोड़ा-सा नमक मिला कर बांधे, दो दिन में पीव निकालकर जखम हो जाता है और जखम खुलने के लिए बेरी के पत्ते कूटकर बांधने से बहुत लाभ होता है।

६–चौराई का साग खाना और उसकी टिकिया नहरवे पर बाँधना र्शातया इलाज है।

॥ दाद की दवा ॥

इसमें पहले खुजली होतीहै और फिर एक गोला चकत्ता-सा पड़ जाता है और उससे खुजली होती है पानी निकलता है।

१–दूधी का दूध लगाने से पुरानी दमा भी जाती रहती है।

२–आक का दूध लगाने से पुरानी दमा भी जाती रहती है।

३–ढाक का बीज नीबू के रस में पीसकर पतला लेप करे, उम्र भर तक दाद न होगा, मगर तकलीफ ज्यादा होगी।

४–पंचार के बीज को दही में भिगोया जावे। जब वह सड़ जाये तो पीसकर लगाये, ५-६ रोज में लगाने से आराम होगा।

५–सुहागे को आग में भूनकर किसी लोह के बर्तनमें खूब बारीक पीसलें फिर घी मिलाकर मरहम बनालें। फौरन इसके लगाने से लाभ होगा।

॥ छाजन ॥

एक प्रकार का यह दाद-सा होता है जिसमें कि खुजली ज्यादा होती है।

१–कैंथ को भूनकर उसका गूदा निकालकर रात को खूब मलकर सो जावे।

२–सत्यानाशी की जड़ पीसकर लगाने से छाजन दाद, सफेद दाद में फायदा होता है।

॥ बुखार ॥

१–कफ का जाड़े के बुखार में आक की कली गुड़ में रखकर खिलावें, ३ मर्तबा ऐसा करने से फिर नहीं आयेगा।

२–लौंग; तुलसी, मुलेठी; वायविहंग के दाने लेकर पावभर पानी में औटावे; जब २ तोला पानी रहे तब उतार कर जानकर पीवें तो सर्दी, जुकाम, इससे दूर होता है।

३–चिरयता, कुटकी; नागर मोथा; हरड़ छोटी, बहेड़ा, आंवला—इन चीजों को लेकर पाव भर पानी में पकावे; १ छटांक पानी रहे तब उतारकर गरमागरम पीवें, इससे पुराना बुखार जाता रहेगा।

* अत्तारी शिक्षा *

आजकल का जमाना दस्तकारी व हुनर का है, जिसको दस्तकारी–हुनर आते हैं वह कभी भूखा नहीं रह सकता; चाहे जहां चला जावे मिट्टी से भी पैसा पैदा कर सकता है। जो लोग हुनर विद्यासे अनभिज्ञ हैं वे लोग भूखों मरते हैं। मैंने ऐसेही लोगों के वास्ते यह पुस्तक बड़ी मेहनत, परिश्रम व खर्च करके लिखी है जिससे अमीर–गरीब सभी फायदा उठा सकें। इस में चूरन; चटनी, अचार, मुरब्बा, शर्बत व पेटेन्ट दवायें, इत्र-तेल बगैर के आजमाये हुए नुश्खे हैं।

।। चूर्ण अनारदाना ।।

सूखा अनार दाना १ सेर, काली मिर्च ५ तोला, जीरा २।। तोले, सौंफ २।। तोले, सेंधा नमक ५ तोला इनको कूट–पीसकर गुड़ या चीनी की चासनी करके आग पर ही मिलादें। काली मिर्च की जगह लाल-मिर्च भी डाली जा सकती है।

।। चूर्ण अनारदाना ।।

दूसरा नुश्खा इस प्रकार है–अमचूर पिसा १ सेर सौंठ भुनी आधा पाव, बड़ी इलायची, आधा पाव मिर्च लाल ५ तोले, नमक पिसा ।। पाव, कालीमिर्च

५ तोले; सूखा अनारदाना ॥ सेर; जीरा २॥ तोले; इनको कूट-पीसकर गुड़ की चासनी करके मिलावे।

॥ शोधी हुई हरं ॥

छोटी हर्र लेकर १५ दिन छाछ में भिगोवे, दो-दो दिन के अन्तर से नया मट्ठा बदलते रहें। पन्द्रह दिन बाद निकालकर नीचे लिखा मसाला मिलाकर घी में तले। मसाला इस प्रकार है—जीरा २॥ तोले, हींग २ तोले, नमक ५ तोले, सबको कूट—पीसकर कपड़छन करलें।

॥ शोधी हुई हर्र (दूसरा नुस्खा)

सस्ती और स्वादिष्ट इस प्रकार बनती है—

पीपल, काली मिर्च; लौंग, सुहागा, सब आधा२ पाव अजवायन भुनी, जीरा, नौसादर आधा-२ सेर, सौंठ भुनी, काला नमक, चूड़ा एक-२ पाव, धनिया आधा सेर, हर्र छोटी भाड़ पर भुनी २ सेर, नमक सांभर आधा सेर, अमचूर पिसा १२ सेर, मिर्च लाल १ सेर सबको कुटवा—पिसवाकर आवश्यकता अनुसार पानी मिलाकर हर्र के बराबर गोली बनालें और सुखाकर काम में लावें।

॥ शोधी हुई पीपल ॥

छोटी पीपल को नीबू के रस या मट्ठा में काला नमक व थोड़ी-सी भुनी हींग डालकर पन्द्रह दिन तक रखे, जब पीपल रस को बिलकुल सुखादे तब निकाल कर १-२ पीपल आग अंगारे पर भूनकर खाना खाने केबाद खावे, पेट की कैसी भी बीमारी, पुराने बुखार तक को दूर करती है ।

॥ शोधी हुई पीपल (दूसरा नुश्खा)

जिस प्रकार शोधी हुई हरं (दूसरा नुश्खा) बनाई जाती है ठीक उसी प्रकार यह भी पीपल की शक्ल की बनाई जाती है ।

॥ चूर्ण जीरावटी नं० १ ॥

जीरा १ सेर भाड़ पर भुना हुआ, अमचूर पिसा दस सेर, बूरा ३ सेर, नमक पिसा ३सेर, मिर्च लाल पिसी २ पाव; पहले जीरे को पानी में भिगो दे, भीग जाने पर ऐलमोनियम के टेनीथे में थोड़ा-सा निकाल ले । उसके बाद ऊपर लिखा हुआ मसाला मिलाकर अपने पास रखले, जीरे पर थोड़ा-सा मसाला पटक कर हाथ से मिलावे फिर पानी के छींटे देकर मसाला मिलावे, इसके बाद धूप में सुखा दें । इसी प्रकार

सब जीरे पर तमाम मसाला चढ़ावें ।

॥ जीरावटी दूसरा नुश्खा ॥

जीरे को नीबू के रस में ३ दिन भीगने दें, उसी रस में काली मिर्च, सेंधा नमक आवश्यकतानुसार मिलादें; ३ दिन बाद धूप में सुखाकर रखलें ।

॥ जीराद्वटी तीसरा नुश्खा ॥

उपरोक्त रीति से बने हुए जीरे को सुखावे नहीं, उसमें छोटी इलायची, लौंग, सौंठ, अजवायन, छोटी पीपल प्रत्येक को जीरे से १६वां भाग लेकर पीसकर डालदें और गीला ही पीसकर उसमें थोड़ी-सी हींग भुनी पीसकर डालदें और उनकी गोलियां बना सुखा कर रखलें । यह गोली पाचक, भूख को बढ़ाने वाली तथा बहुत ही स्वादिष्ट होती है ।

॥ चूर्ण सोंफ वटी नं० १ ॥

जीरावटी की पहली व दूसरी विधि के अनुसार सोंफवटी बनाई जाती है । इसमें बजाय १ सेर जीरे के १ सेर सोंफ भाड़ पर भुनानी चाहिए ।

॥ सोंफवटी नं० २ ॥

सोंफ १ छटांक, सेंधा व काला नमक १-१ तोले, काली मिर्च १ तोले, बड़ी हर्ड १ तोले, सबको कूट–

पीसकर नीबू के रस में गोलियां बनालें। २-४ गोली खाकर ऊपर से गर्म पानी पीने से दस्त साफ होताहै, पेट की बीमारी दूर होती है।

॥ चूर्ण सोंठ वटी नं० १ ॥

सोंठ आधा सेर, जीरा १ छ०, कालीमिर्च १ छ०, सेंधा नमक आधा पाव, अजवायन १ तोले, छोटी पीपल १ तोले, इनको १४ घण्टे नीबू के रस में भिगो दे, बादमें पीसकर गोलियां बनालें; ये गोलियां पाचक और स्वादिष्ट होती हैं।

॥ सोंठ वटी नं० २ ॥

जिस प्रकार जीरावटी नं० १ तैयार की जाती है उसी प्रकार ये भी होती है। फर्क इतना हैकि सोंठ भाड़ पर भुनने के बाद सरोते से छोटे-छोटे टुकड़े कर लेने चाहिए और १ सेर जीरे के बजाय १ सेर सोंठ भुनानी चाहिए।

॥ इलायची वटी ॥

बड़ी इलायची के बीज १ सेर; १० सेर पिसा अमचूर, २॥ सेर बूरा, ३सेर नमक, आधा सेर पिसी लाल मिर्च, इन मसालों को मिलाकर जीरावटी नं० १ की भांति चढ़ाया जाताहै। इसी प्रकार अजवायन

वटी, मुनक्का वटी, किसमिस वटी जिस किसीका भी चूरन बनाया जाये तैयार हो जाता है ।

॥ चूर्ण नमक सुलेमानी ॥

छोटी पीपल, नोसादर, सोंठ, काली मिर्च, सेंधा नमक, सब चीजें बराबर लेकर कूट-पीस, कपड़छन करलें । यह चूरन अधिक फायदा करता है ।

॥ चूरन सुलेमानी ॥

काला नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक, खारी नमक, जवाखार, नोसादर; सफेद जीरा, नीबूका सत कमली सोरा, सोंठ, कालीमिर्च; छोटी पीपल, अम्लबेंत, सफेद सज्जी, भुनी हींग, (हींग व नीबू का रस) आधा भाग, बाकी सब चीजें समान भाग में लेकर कूट-पीसकर कपड़छन कर लें । यह पेट के तमाम रोगों में रामबाण है ।

॥ चूरण हिंगाष्टक ॥

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, अजवायन; अजमोद, सेंधा नमक, सफेद जीरा, स्याह जीरा, सब चीजें समान भाग (दोनों जीरे भुने) आधा भाग भुनी हींग कूट-पीसकर कपड़छन करके तैयार करलें । यह चूर्ण बदहजमी को दूर करके भूख को बढ़ाता है । भोजन

करते समय दाल में डालकर सेवन करें तो बहुत ही लाभदायक है।

॥ चूर्ण हनुमान वाण ॥

सेंधा नमक डेढ़ तोले, काला नमक डेढ़ तोले, नौसादर २ तोले, साँभर नमक ३ माशे, बड़ी इलायची बीज भुने १ तोले, लौंग ६ माने, भुनी सोंठ १ तोले, काली मिर्च ६ मासे भुनी हींग ॥ तोले, सबको कूट-पीस कपड़छन कर सेवन करें। पेट-दर्द कैसा भी हो फौरन दूर होता है।

॥ चूर्ण अग्नि दीपक ॥

जवाखार, लौंग, जीरा सफेद, चकोतर छिलका सूखा, काली मिर्च, दालचीनी, बालछड़, पत्रज, तज, प्रत्येक ६ माशे; छोटी हर्र, गुलाब फूल सूखे, सौंफ, अजवाइन, ततड़ीक, पोदीना सूखा, वंशलोचन प्रत्येक ८माशे, दाना इलायची, सौंठ, आमला सूखा, धनिया निसोत प्रत्येक १ तोले, बड़ी हर्र, सैंधा नमक, काला नमक, कचरिया भुनी, सबको कूट–छानकर ८ माशे रुमी मस्तगी खरल कर मिलावे और सब चीजों को मिलाकर नीबू के अर्क में भिगो दें, इसके साथ ही ६ माशा चने का खार डाल दें। धूप में सुखाकर पीस

लें। मात्रा १ से ३ माशे तक सेवन से वायु गोला, तिल्ली, उदर विकार; क्षीणता, बवासीर, संग्रहणी, रक्त विकार, अफरा, शूल, खांसी, आमबात, मंदाग्नि अजीर्ण आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

॥ चूर्ण दशतावर ॥

अजवायन १० तोले, सनाय की पत्ती १० तोले, गुलाब के सूखे फूल ५ तोले, काली मिर्च ५ तोले, काला नमक २० तोले लेकर चूर्ण बनालें। मात्रा ६ माशे गर्म जल से सोते समय लेना चाहिए।

॥ चूर्ण दिल की लकीर ॥

सोंठ भुनी १ पाव, नमक ३ छ. नौसादर आधा पाव को कूट-छानके तैयार करें, बड़ा जायकेदार है।

॥ चूर्ण लवण भाष्कर ॥

समुन्द्रथेन १० तोले, काला नमक १० तोला, विड नमक, सेंधा नमक, धनिया; पीपला मूल, काला जीरा, तालिश-पत्र, नागकेशर; तमालपत्र; अमलवेद प्रत्येक ८ तोला; तज १ बड़ी, इलायची २ तोला को कूट-पीस छानकर टैयार कर लें। मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक गुण प्रसिद्ध है। [समाप्त]